अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

षष्टम अंक / वर्ष 2025-26

नागकेसर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा, अगरतला- 799 006

भारतीय मधुमक्खी

Apis cerana indica, जिसे भारतीय मधुमक्खी भी कहा जाता है, एशियाई मधुमक्खी की एक उप-प्रजाति है। यह भारत, पाकिस्तान, नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेश, श्रीलंका, थाईलैंड और मुख्य भूमि एशिया में पाई जाने वाली और पाली जाने वाली प्रमुख मधुमक्खियों में से एक है। यह अपेक्षाकृत कम आक्रामक होती है और शायद ही कभी झुंड बनाकर उड़ने (swarming) का व्यवहार दिखाती है, इसलिए यह मधुमक्खी पालन के लिए आदर्श मानी जाती है।

यह यूरोपीय मधुमक्खी (Apis mellifera) के समान होती है, जो आकार में थोड़ी बड़ी होती है और जिसे आसानी से पहचाना जा सकता है।

ये आमतौर पर पेड़ों के खोखले तनों और इंसानों द्वारा बनाई गई संरचनाओं में कई छत्तों वाले घोंसले बनाती हैं। ये मधुमक्खियाँ विशेष रूप से बनाए गए छत्तों और खोखली जगहों में रहने के लिए खुद को ढाल सकती हैं। इनके घोंसला बनाने की आदत का मतलब है कि ये उन समशीतोष्ण या पहाड़ी इलाकों में भी अपनी बस्ती बसा सकती हैं जहाँ सर्दियाँ लंबी होती हैं या तापमान काफी ठंडा रहता है। इनके छत्तों में आमतौर पर कुछ हज़ार ही श्रमिक मधुमक्खियाँ होती हैं, जबकि यूरोपीय मधुमक्खियों के छत्तों में इनकी संख्या 50,000 तक हो सकती है।

नागकेसर

अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

षष्टम अंक / वर्ष 2026-27

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा, अगरतला- 799 006

नागकेसर

षष्टम अंक

प्रधान संरक्षक

श्री शैलेन्द्र विक्रम सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

मुख्य संरक्षक

श्री काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री हिमांशु, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संपादन

सुश्री साधना राय, सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक मण्डल

श्री सुमित कुमार, वरिष्ठ अनुवादक

श्री संजीव कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

संपादकीय

राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्त्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला की हिन्दी गृह-पत्रिका **'नागकेसर'** का **'षष्टम'** अंक (मार्च 2026) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका में एक ओर जहाँ विचारों की सहज और सुन्दर अभिव्यक्तियों एवं वर्तमान परिदृश्य से संबन्धित रचनाएं यथा लाचार पिता, ऋण माफ़ी, प्रेरणा स्त्रोत हैं तो वहीं दूसरी ओर महाबलेश्वर की एक यादगार यात्रा, उस शहर में मेरा फोटोग्राफी दौरा जैसे यात्रावृतांत और उनके वर्णन अत्यंत सजीव प्रतीत होते हैं। किताबें पढ़ने का महत्व, सिलिकॉन चिप बनाम धड़कता दिल, कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) आदि रचनाएं आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं के महत्व को दर्शाती हैं। इनके अतिरिक्त पत्रिका में निहित कविताएं यथा क्या था? तथा रावण से काम चला लूँगा, पाठकों के मन मस्तिष्क पर एक अलग एवं अमिट छाप छोड़ती है।

यह देखकर अपार हर्ष होता है कि व्यस्त कार्यालयीन दायित्वों के बीच भी हमारे सहकर्मी साहित्यिक अभिरुचि को निरंतर आगे बढ़ा रहें हैं।

संपादक मण्डल और संरक्षक मण्डल दोनों ही कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनाएं अनवरत् रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि आगामी 'नागकेसर' पत्रिका के अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनात्मकता से परिपूर्ण रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन कर राजभाषा के विकास में अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

संपादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	किताबें पढ़ने का महत्व	अजित दास, डीईओ, ग्रेड-बी	लेख	12-15
2.	उत्तर-पूर्व भारत की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति	अजित देवनाथ, लेखापरीक्षक	लेख	17-19
3.	भारत में कृत्रिम बुद्धिमता: रोजगार परिवर्तन और आर्थिक प्रभाव भूमिका	अनिमेष बोस, लेखापरीक्षक	लेख	20-23
4.	कृत्रिम बुद्धिमता (एआई)	आशीष गुप्ता, लिपिक	लेख	24-31
5.	सपनों का सफ़र	मन्नु कुमार सिंह	कविता	32
6.	सिलिकॉन चिप बनाम धड़कता दिल	रुपम मेईति	लेख	33-36
7.	उस शहर में मेरा फोटोग्राफी दौरा, जो हमेशा आपका इंतजार करता	विप्रतीप दास, लेखापरीक्षक	यात्रावृतांत	37-46

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
8.	प्रसन्नता का कोई मार्ग नहीं है, प्रसन्नता हीं मार्ग है	विशाल सिंह, लेखापरीक्षक	लेख	47-49
9.	वर्तमान समय में पूर्वोत्तर भारत	सुभम कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	50-56
10.	ऋण माफ़ी: चुनावी वादों और जमीनी हकीकतों के बीच का फासला	संजित कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	57-63
11.	रावण से काम चला लूँगा	संजीव कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	कविता	64-65
12.	मिट्टी भर	संजीव कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	कविता	66
13.	जाने दो वहाँ	संदीप विश्वकर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	67
14.	छत के कपड़े	संदीप विश्वकर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	68-69
15.	धुंधली सुबह और झील के किनारे रोमांच: महाबलेश्वर की एक यादगार यात्रा	सुभांशु कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	यात्रावृतांत	70-72

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
16.	लाचार पिता	सुमित कुमार, वरिष्ठ अनुवादक	लेख	73-77
17.	सहानुभूति के बिना बुद्धि दमनकारी हो जाती है	सौरभ राज, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	78-82
18.	भारतीय बेरोजगार युवाओं में ब्लॉगिंग के प्रति बढ़ता आकर्षण:कारण और प्रभाव	सायक नंदी, लेखापरीक्षक	लेख	83-87
19.	गलत होने की कीमत, कुछ न करने की कीमत से कम है	हिमांशु, उप महालेखाकार	लेख	88-91

अस्वीकरणः 'नागकेसर' पत्रिका की रचना राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रयोजन से की गयी है। इसमें निहित लेखों, कविताओं इत्यादि में अभिव्यक्त विचार, सुझाव मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय अथवा संपादक मण्डल इनसे सहमत हो।

संपादन सहयोग

श्री अजित दास, डीईओ (ग्रेड-बी), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला

आदरणीय अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का कार्यालय परिसर में स्वागत करते हुए प्रधान महालेखाकार महो

आईएएडी पूर्व जोन टेबल टेनिस प्रतियोगिता के विजेता कार्यालय के जेहो हिमनकुलपुइंघेता, क्लर्क को पुरस्कृत करते हुये प्रधान महालेखाकार महोदय एवं वरिष्ठ उप महालेखाकर महोदय

प्रधान महालेखाकार महोदय के कर कमलों द्वारा कार्यालय के हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका 'नागकेसर' के पंचम अंक का विमोचन

हिन्दी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह की कुछ झलकियाँ

किताबें पढ़ने का महत्व

अजित दास,
डीईओ, ग्रेड-बी

किताबें पढ़ने का महत्व बहुत अधिक है। किताबें पढ़ना सिर्फ एक शौक नहीं है, यह एक दीर्घकालिक निवेश है। एक पाठक के रूप में, आप हजारों लोगों के जीवन और अनुभवों से सीख सकते हैं, जो आपको एक पूर्ण इंसान बना देगा। यह खुद को जानने और दुनिया को देखने के लिए एक अनूठी खिड़की है। एक अच्छी किताब लोगों की सोच और जीवन शैली को मौलिक रूप से बदल सकती है। यह न केवल समय बिताने का एक साधन है, बल्कि मनुष्य के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण भी है। किताबें पढ़ने के मूल्य या आवश्यकता पर 5 मुख्य भागों में चर्चा की गई है:

1. संज्ञानात्मक विकास

पुस्तकें ज्ञान का प्राथमिक स्रोत हैं। हम अपने छोटे से जीवन में सब कुछ स्वयं अनुभव नहीं कर सकते हैं, लेकिन किताबें पढ़कर, हम हजारों वर्षों के इतिहास, संस्कृति और दूसरों के जीवन के अनुभवों से सीख सकते हैं। किताबें पढ़ना मस्तिष्क के लिए एक तरह का व्यायाम है। जिस तरह एक्सरसाइज शरीर को स्वस्थ रखती है, उसी तरह किताबें पढ़ने से दिमाग भी सक्रिय और तेज रहता है। किताबें पढ़ते समय दिमाग के अलग-अलग हिस्से सक्रिय हो जाते हैं, जिससे याददाश्त और ध्यान देने की क्षमता बढ़ती है। किताबों को नियमित रूप से पढ़ने से पता चला है कि उम्र से संबंधित बीमारियों जैसे अल्जाइमर या डिमेंशिया का खतरा बहुत कम हो जाता है।

किताब का डिस्क्रिप्शन पढ़कर लोग अपने दिमाग में ऐसे दृश्य गढ़ते हैं, जिससे लोगों की क्रिएटिविटी और कल्पना कई गुना बढ़ जाती है।

2. शब्दावली और संचार

किताबें पढ़कर लोग नए शब्दों से परिचित होते हैं जो सुंदर वाक्यों के निर्माण में मदद करते हैं। जो लोग ज्यादा किताबें पढ़ते हैं, उनके हाव-भाव दूसरों की तुलना में कहीं ज्यादा सुरुचिपूर्ण और शक्तिशाली होते हैं। उनकी शब्दावली समृद्ध होती है। नतीजतन, वे अपनी भावनाओं को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं। अच्छी शब्दावली और ज्ञान होने से लोगों से बात करते समय आत्मविश्वास बढ़ता है।

यह देखा गया है कि जिनके पास अच्छा संचार कौशल होता है, वे कार्यस्थल में दूसरों की तुलना में तेजी से पदोन्नत होते हैं।

3. तनाव में कमी और नींद

दिन के अंत में, एक किताब से बेहतर कोई दोस्त नहीं है। यह एक तरह की मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के रूप में कार्य करता है। अच्छी कहानियां या कविताएं हमें एक कल्पनाशील जीवन देती हैं, जो तनाव को कम करने में मदद करती हैं। आज की व्यस्त जिंदगी में तनाव को कम करने के लिए किताबें पढ़ना एक प्राकृतिक दवा की तरह काम करता है। एक अध्ययन के अनुसार, सिर्फ 5-10 मिनट के लिए एक किताब पढ़ने से तनाव लगभग 60-70% कम हो जाता है। यह संगीत सुनने या टहलने जाने की तुलना में तेजी से काम करता है।

सोने से पहले मोबाइल या लैपटॉप की नीली रोशनी की जगह किताब पढ़ने से शरीर को आराम मिलता है और गहरी और आरामदायक नींद सुनिश्चित होती है। खासकर जब हम कहानियां या उपन्यास पढ़ते हैं, तो हम अन्य लोगों के पात्रों

और जीवन के बारे में सोचते हैं और बहुत कुछ सीखते हैं, जो वास्तविक जीवन में भी दूसरों के लिए सहानुभूति बढ़ाने में मदद करता है।

4. ज्ञान और अनुभव का संयोजन

किताबें मानव मस्तिष्क का व्यायाम करती हैं। खासकर जब रहस्य या जटिल विषयों पर किताबें पढ़ते हैं, तो किसी समस्या को हल करने या किसी चीज़ का विश्लेषण करने की क्षमता। जितना अधिक आप पढ़ेंगे, आपकी शब्दावली उतनी ही समृद्ध होगी। यह लोगों से बात करने की क्षमता को बढ़ाता है और उन्हें अपनी राय स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में मदद करता है।किताबें दुनिया के महानतम बुद्धिजीवियों के अनुभवों का भंडार हैं। सैकड़ों वर्षों के ज्ञान पर कुछ ही घंटों में एक पुस्तक द्वारा महारत हासिल की जा सकती है।

दुनिया के अधिकांश सबसे सफल लोगों को आमतौर पर बहुत सारी किताबें पढ़ने की आदत होती है। वे पुस्तकों को ज्ञान का मुख्य स्रोत मानते हैं। किताबें पढ़कर हम घर बैठे दुनिया के विभिन्न देशों, संस्कृतियों और इतिहास के बारे में जान सकते हैं।

किताबें हमें हर चीज का हर कोण से विश्लेषण करना सिखाती हैं, जिससे हमें सही निर्णय लेने में मदद मिलती है। जब हम कोई कहानी या उपन्यास पढ़ते हैं, तो हमारा दिमाग उन दृश्यों को हमारे दिमाग में व्यवस्थित करता है। यह प्रक्रिया हमारी कल्पना को तेज करती है और हमें रचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

5. दीर्घायु और दर्शन

किताबें पढ़ने से लोगों के जीवन को देखने का नजरिया बदल जाता है और उन्हें लंबे समय तक जीने में मदद मिलती है। एक अध्ययन के अनुसार, जो लोग दिन में कम से कम 30 मिनट किताबें पढ़ते हैं, वे दूसरों की तुलना में औसतन दो

साल अधिक जीते हैं। किताबें लोगों को अकेलेपन से बचाती हैं। एक अच्छा पाठक कभी भी अकेला महसूस नहीं करता क्योंकि एक किताब उसका सबसे अच्छा दोस्त है।

नैतिकता और जीवन की भावना पैदा करने के लिए किताबों का कोई विकल्प नहीं है। अच्छी किताबें लोगों में मूल्यों और मानवता का संचार करती हैं।

पुस्तक हमें विभिन्न पात्रों और स्थितियों के साथ सामना करती है। इससे दूसरों के दुखों, कष्टों या पदों को समझने की हमारी क्षमता बढ़ती है, जो हमें एक बेहतर इंसान बनाती है।

"एक अच्छी किताब पढ़ना एक महान व्यक्ति के साथ बातचीत करने के समान है।

किताबें न केवल हमें अकेले रहना सिखाती हैं, बल्कि हमें एकांत को भरना भी सिखाती हैं। इसलिए जरूरी है कि व्यस्तता के बीच कम से कम कुछ पेज की किताबें पढ़ने की आदत डालें।

प्रधान महालेखाकार कक्ष में आदरणीय अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय की उपस्थिति

लेखापरीक्षा सप्ताह 2025 के दौरान पदयात्रा का आयोजन

उत्तर–पूर्व भारत की सामाजिक–राजनीतिक स्थिति

अजित देवनाथ,
लेखापरीक्षक

भारत का उत्तर–पूर्वी क्षेत्र भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र भारतवर्ष की मुख्य भूमि से एक संकीर्ण सिलिगुड़ी गलियारे द्वारा जुड़ा हुआ है और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के कारण रणनीतिक महत्व भी रखता है। असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोरम, मेघालय और त्रिपुरा इन सात राज्यों को सामूहिक रूप से उत्तर–पूर्व भारत कहा जाता है। उत्तर-पूर्व भारत विविध जनजातियों, भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का संगम है, जिससे इसकी सामाजिक–राजनीतिक संरचना अत्यंत जटिल और विशिष्ट बनती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और राजनीतिक विकास :- उत्तर–पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक संदर्भ को समझना आवश्यक है। औपनिवेशिक काल में इस क्षेत्र को मुख्यधारा की राजनीति से अलग रखा गया, जिससे विकास की गति धीमी रही। स्वतंत्रता के बाद भी प्रशासनिक, आर्थिक और राजनीतिक उपेक्षा की भावना यहाँ के लोगों में बनी रही। इसी कारण कई क्षेत्रों में अलगाववादी और स्वायत्तता से जुड़े आंदोलन उभरे। नागालैंड, मिज़ोरम, मणिपुर, त्रिपुरा और असम जैसे राज्यों में लंबे समय तक उग्रवाद और सशस्त्र संघर्ष देखने को मिला। इन आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक पहचान की रक्षा, राजनीतिक स्वायत्तता और आर्थिक संसाधनों पर स्थानीय नियंत्रण एवं भाषा की माँग कर रहे हैं। केंद्र सरकार द्वारा इन समस्याओं से निपटने के लिए समय–समय पर शांति समझौते और विशेष संवैधानिक प्रावधान किए गए।

सामाजिक संरचना और विविधता :- उत्तर–पूर्व भारत की सामाजिक संरचना मुख्यतः जनजातीय समाजों पर आधारित है। यहाँ सैकड़ों जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनकी अपनी विशिष्ट भाषाएँ, रीति–रिवाज़, धार्मिक विश्वास और सामाजिक संगठन हैं। अधिकांश जनजातियाँ सामुदायिक जीवन शैली में विश्वास करती हैं, जहाँ भूमि और संसाधनों पर सामूहिक अधिकार की परंपरा रही है। इस क्षेत्र में ईसाई, हिंदू, बौद्ध, मुस्लिम और पारंपरिक जनजातीय धर्मों का सह-अस्तित्व देखने को मिलता है, जो धार्मिक सहिष्णुता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। हालाँकि, आधुनिक शिक्षा, शहरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव से पारंपरिक सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है। युवा पीढ़ी रोजगार और बेहतर जीवन की तलाश में शहरों और विदेशों की ओर पलायन कर रहे हैं, जिससे ग्रामीण और जनजातीय समाजों में सामाजिक असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। इसके साथ ही, गरीबी, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और बुनियादी ढाँचे का अभाव आज भी कई दूरदराज़ क्षेत्रों में गंभीर समस्या बना हुआ है।

विकास और शासन की चुनौतियाँ :- उत्तर–पूर्व भारत में विकास की गति असमान रही है। प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद औद्योगिक विकास सीमित है। परिवहन, संचार और ऊर्जा जैसी आधारभूत सुविधाओं की कमी ने आर्थिक प्रगति को बाधित किया है। इसके अतिरिक्त, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमता और राजनीतिक अस्थिरता ने विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा डाली है। हाल के वर्षों में केंद्र और राज्य सरकारों ने सड़क, रेल, विमानमार्ग, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में निवेश बढ़ाया है। "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" के अंतर्गत उत्तर–पूर्व को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिल सकता है।

जातीयता और पहचान की राजनीति :- उत्तर–पूर्व भारत में राजनीति का एक प्रमुख पहलू जातीयता और पहचान की राजनीति है। विभिन्न जनजातीय समूह

अपनी पहचान, भाषा और भूमि अधिकारों की रक्षा को लेकर संवेदनशील हैं। कई बार यह पहचान आधारित राजनीति आपसी संघर्ष का कारण भी बनती है। मणिपुर, असम और त्रिपुरा में जातीय संघर्षों ने सामाजिक ताने–बाने को प्रभावित किया है। अवैध प्रवासन का मुद्दा भी यहाँ की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्थानीय जनसंख्या को यह भय रहता है कि बाहरी लोगों के आगमन से उनकी सांस्कृतिक पहचान, अधिकार और आर्थिक अवसरों पर प्रभाव पड़ेगा। असम आंदोलन और राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) और नागरिक संशोधन अधिनियम (CAA) जैसे विषय इसी संदर्भ में उभरे हैं।

सामाजिक–राजनीतिक सुधार और शांति प्रयास :- पिछले कुछ दशकों में उत्तर–पूर्व भारत में शांति और स्थिरता की दिशा में सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। मिज़ोरम और नागालैंड शांति समझौता एक सफल उदाहरण है, जहाँ उग्रवाद का अंत कर लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत किया गया। इसी प्रकार अन्य राज्यों में भी संवाद और विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। शिक्षा के प्रसार, महिला सशक्तिकरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और स्थानीय स्वशासन संस्थाओं की भूमिका को मजबूत करने से सामाजिक–राजनीतिक जागरूकता बढ़ी हैं। युवाओं और महिलाओं की राजनीति में भागीदारी भी धीरे–धीरे बढ़ रही है, जो लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत है।

निष्कर्ष :- उत्तर–पूर्व भारत की सामाजिक–राजनीतिक स्थिति जटिल, बहुआयामी और गतिशील है। यहाँ की समस्याएँ ऐतिहासिक उपेक्षा, जातीय विविधता और भौगोलिक कठिनाइयों से जुड़ी हुई हैं। फिर भी, यह क्षेत्र अपार सांस्कृतिक संपदा, प्राकृतिक संसाधनों और मानव क्षमता से भरपूर है। यदि समावेशी विकास, संवेदनशील शासन और सतत संवाद को अपनाया जाए, तो उत्तर–पूर्व भारत न केवल राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करेगा, बल्कि भारत के सामाजिक और राजनीतिक भविष्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: रोजगार परिवर्तन और आर्थिक प्रभाव भुमिका

अनिमेष बोस,
लेखापरीक्षक

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI) समकालीन विश्व की सबसे प्रभावशाली सामान्य प्रयोजन तकनीकों (General Purpose Technologies) में से एक है। यह ऐसी प्रणाली है जो मानव बुद्धि से जुड़े कार्य—जैसे सीखना, तर्क करना, पैटर्न पहचानना और निर्णय लेना—स्वचालित रूप से कर सकती है। भारत जैसे विकासशील, श्रम-प्रधान और जनसंख्या-बहुल देश में AI का प्रभाव विशेष रूप से **रोजगार संरचना** और **आर्थिक विकास** पर पड़ रहा है। जहाँ एक ओर AI उत्पादकता, नवाचार और आर्थिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर यह पारंपरिक रोजगार को विस्थापित कर **जॉब शिफ्ट**, कौशल अंतर और आय असमानता जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है। इस संदर्भ में AI को न तो केवल खतरे के रूप में देखा जा सकता है और न ही केवल अवसर के रूप में। आवश्यक है संतुलित और नीति-आधारित दृष्टिकोण।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार संरचना में परिवर्तन

1. ऑटोमेशन और पारंपरिक नौकरियों पर प्रभाव

AI और ऑटोमेशन का सबसे अधिक प्रभाव उन नौकरियों पर पड़ता है जो दोहराव वाली (Repetitive), नियम आधारित (Rule-based), कम कौशल वाली (Low-skill) हैं।

प्रमुख प्रभावित क्षेत्र - विनिर्माण (Assembly lines, Quality checking)**,** बैंकिंग बैक-ऑफिस कार्य**,**डेटा एंट्री और क्लेरिकल नौकरियाँ **,**कॉल सेंटर और ग्राहक सेवा इत्यादि।

भारत में बड़ी संख्या में श्रमिक इन क्षेत्रों में कार्यरत हैं। AI आधारित प्रणालियाँ लागत कम करती हैं और दक्षता बढ़ाती हैं, जिससे **रोजगार विस्थापन (Job Displacement)** की आशंका उत्पन्न होती है।

2. नौकरी समाप्ति बनाम नौकरी परिवर्तन

AI के प्रभाव को केवल "नौकरी खत्म होना" कहकर देखना भ्रामक होगा। वास्तव में यह—

कुछ नौकरियाँ समाप्त करता है,कई नई नौकरियाँ सृजित करता है और अधिकांश नौकरियों की प्रकृति बदल देता है

उभरती नई नौकरियाँ-डेटा वैज्ञानिक,मशीन लर्निंग इंजीनियरिगं, AI एथिक्स एक्सपर्ट,साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ**,**डिजिटल प्लेटफॉर्म मैनेजर**-** इस प्रकार AI रोजगार का **संरचनात्मक रूपांतरण (Structural Transformation of Employment)** कर रहा है।

3. कौशल अंतर (Skill Gap) और मानव पूंजी

AI आधारित अर्थव्यवस्था में सबसे गंभीर चुनौती है—**मांग और आपूर्ति के बीच कौशल अंतर।**

भारत की स्थिति-बड़ी युवा आबादी**;**परंतु सीमित तकनीकी कौशल और शिक्षा और उद्योग की आवश्यकताओं में असंतुलन

इसका परिणाम है—एक ओर बेरोजगारी,दूसरी ओर कुशल मानव संसाधन की कमी।

यदि कौशल विकास पर ध्यान नहीं दिया गया, तो AI **डेमोग्राफिक डिविडेंड** को **डेमोग्राफिक बर्डन** में बदल सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आर्थिक प्रभाव

1. उत्पादकता वृद्धि और आर्थिक विकास

AI का सबसे सकारात्मक आर्थिक प्रभाव है—श्रम उत्पादकता में वृद्धि, संसाधनों का कुशल उपयोग, लागत में कमी, AI आधारित नवाचार उद्योग, कृषि, स्वास्थ्य और सेवाओं में भारत की **दीर्घकालिक आर्थिक वृद्धि** को गति दे सकता है।

2. स्टार्ट-अप, नवाचार और डिजिटल अर्थव्यवस्था

AI ने भारत में नवाचार आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है- फिनटेक, हेल्थटेक, एग्रीटेक, एडटेक इत्यादि। ये AI स्टार्ट-अप—नए रोजगार सृजित करते हैं, निवेश आकर्षित करते हैं और भारत को वैश्विक डिजिटल मूल्य श्रृंखला में जोड़ते हैं

यह भारत को **ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था** की ओर ले जाता है।

3. MSME और असंगठित क्षेत्र पर प्रभाव

भारत की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा MSME और असंगठित क्षेत्र पर आधारित है। AI अपनाने की उच्च लागत,तकनीकी ज्ञान का अभाव,डिजिटल अवसंरचना की कमी से यदि यह क्षेत्र AI परिवर्तन से बाहर रह गया, तो आर्थिक असंतुलन और रोजगार संकट गहराएगा।

4. आय असमानता और क्षेत्रीय विषमता

AI से होने वाला आर्थिक लाभ मुख्यतः—शहरी, उच्च शिक्षा प्राप्त, तकनीकी कौशल वाले लोगों तक सीमित हो सकता है।

जबकि—ग्रामीण,कम शिक्षित और श्रम आधारित श्रमिक पीछे छूट सकते हैं।

इससे **आय असमानता**, क्षेत्रीय असंतुलन और सामाजिक तनाव बढ़ने की संभावना है।

AI, श्रम बाजार और सामाजिक प्रभाव

असंगठित क्षेत्र में रोजगार सुरक्षा- भारत का लगभग 90% श्रमबल असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है। AI और ऑटोमेशन के विस्तार से— रोजगार की अनिश्चितता बढ़ेगी और सामाजिक सुरक्षा की मांग बढ़ेगी।

महिलाओं और युवाओं पर प्रभाव- AI आधारित डिजिटल कार्य— महिलाओं के लिए लचीले रोजगार अवसर,वर्क-फ्रॉम-होम की सुविधा प्रदान कर सकता है।

लेकिन यदि डिजिटल कौशल तक समान पहुँच नहीं हुई, तो लैंगिक असमानता भी बढ़ सकती है।

नीति विकल्प और आगे की राह

1. व्यापक स्किलिंग और री-स्किलिंग-AI, डेटा और डिजिटल कौशल प्रशिक्षण, उद्योग-शिक्षा सहयोग, लाइफ-लॉन्ग लर्निंग मॉडल

2. शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक सुधार-स्कूल स्तर से डिजिटल साक्षरता, तकनीकी + मानविकी का संतुलन, व्यावहारिक और समस्या-आधारित शिक्षा

3. समावेशी AI नीति-ग्रामीण और क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित AI, भारतीय भाषाओं में तकनीक, MSME के लिए सस्ती AI समाधान

4. सामाजिक सुरक्षा और श्रम सुधार-रोजगार संक्रमण सहायता, बेरोजगारी बीमाकौशल-आधारित सामाजिक सुरक्षा

निष्कर्ष: कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत के लिए न तो पूर्णतः खतरा है और न ही स्वतः समाधान। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि भारत—कौशल

विकास,शिक्षा सुधार,समावेशी नीति और सामाजिक सुरक्षा को कितनी गंभीरता से अपनाता है।

यदि सही रणनीति अपनाई जाए, तो AI रोजगार संकट नहीं बल्कि बेहतर रोजगार और सशक्त अर्थव्यवस्था का माध्यम बन सकता है।

AI का भविष्य भारत में **मानव-मशीन सहयोग** का भविष्य है, जहाँ तकनीक मानव क्षमता को प्रतिस्थापित नहीं बल्कि सशक्त बनाए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)

आशीष गुप्ता,
लिपिक

आज पूरी दुनिया में टेक्नोलॉजी की दृष्टि से दो बड़े स्तरों पर काम हो रहा है - कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इंटरनेट ऑफ थिंग्स। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) विगत एक दशक में चर्चा के केंद्र में रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में एआई का प्रयोग बढ़ रहा है। अब शिक्षा के क्षेत्र में एआई का प्रयोग ग्रेडिंग, रिकॉर्ड कीपिंग व अंक देने में; व्यापार में ग्राहक को तत्काल सेवा देने के लिए, विनिर्माण क्षेत्र में अधिक उन्नत रोबोट का उपयोग व्यापक रूप से हो रहा है। संभावना यह भी है कि भविष्य में इसके द्वारा उन सभी कार्यों को किया जा सकेगा जो एक इंसान करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2025-26 का अंतरिम बजट पेश करते समय केंद्रीय मंत्री ने इसका उल्लेख किया। आज लगभग हर उस क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जिक्र होता है, जहाँ किसी काम को स्वचालित रूप से मनुष्य के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बिना पूरा किया जा सकता है। कुछ ऐसे क्षेत्रों में जिनमें मनुष्य के काम करने में जोखिम हो सकता है, उनमें एआई का इस्तेमाल वरदान सिद्ध हुआ है। लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी इसका अपवाद नहीं है। जहाँ इसके अनेक लाभ हैं, वहीं इसके कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

बेहद सरल शब्दों में पहले कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह गतिविधि है जिसके द्वारा मशीनों को "बुद्धिमान बनाने" का काम किया जाता है

और बुद्धिमत्ता वह गुण है जो किसी इकाई को अपने वातावरण में उचित और दूरदर्शिता के साथ कार्य करने में सक्षम बनाता है। जब कोई मशीन या उपकरण परिस्थितियों के अनुकूल सीखकर समस्याओं को हल करता है तो यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दायरे में आता है। इसे विचार करने, नियोजन, सीखने, भाषा की प्रोसेसिंग, अवधारणा, गति, रचनात्मकता आदि का मिश्रण कहा जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इतिहास

जॉन मैकार्थी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संस्थापक थे। उन्होंने अपने साथी मार्विन मिन्स्की, हर्बर्ट साइमन और एलेन नेवेल के साथ मिलकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े अनुसंधान और इसकी संस्थापना की थी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शब्द की खोज साल 1955 में जॉन मैकार्थी द्वारा ही की गई थी। साल 1956 में डार्टमाउथ कॉलेज में आयोजित एक कार्यशाला के दौरान कृत्रिम बुद्धिमत्ता शब्द का जिक्र किया गया था। साल 1956 में डार्टमाउथ कॉलेज में जॉन मैकार्थी ने ही इस विषय पर कार्यशाला का आयोजन भी किया था जिसमें इस विषय पर चर्चा की गई थी। उस वक्त इस विषय पर शुरू किया गया कार्य वैज्ञानिकों ने अभी तक जारी रखा है और जॉन मैकार्थी की सोच को एक नया मुकाम दिया है। साल 1955 में अमेरिकी कंप्यूटर वैज्ञानिक और संज्ञानात्मक वैज्ञानिक जॉन मैकार्थी ने जब इस पर कार्य शुरू किया था, उस वक्त तकनीक में इतना विकास नहीं हुआ था; लेकिन अब उन्नत एल्गोरिदम, कंप्यूटिंग पावर, स्टोरेज में सुधार के कारण आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लोकप्रिय और कामयाब बनाया जा सका है।

कुछ विचारणीय प्रश्न?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्यों के लिए उल्लेखनीय लाभ के साथ प्रभावशाली अनुप्रयोग उपलब्ध कराती है, लेकिन सामाजिक, राजनीतिक या नैतिक पहलुओं के साथ कई ऐसे अनुत्तरित प्रश्न हैं, जिनका जवाब मिले बिना इस पर प्रश्नचिह्न

बना ही रहेगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यापक इस्तेमाल के ऐसे परिणाम हो सकते हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की गई है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मनुष्यों के स्थान पर मशीनों से काम लिया जाएगा, मशीनें स्वयं ही निर्णय लेने लगेंगी और उन पर नियंत्रण नहीं किया गया तो इससे मनुष्य के लिए खतरा भी उत्पन्न हो सकता है।

वैज्ञानिक इसे सबसे बड़ा खतरा तब मानते हैं जब कृत्रिम बुद्धि के जरिये मशीनें बिना मानवीय हस्तक्षेप के नैतिक प्रश्नों पर फैसला लेने लगेंगी। जैसे—जीवन, सुरक्षा, जन्म-मृत्यु, सामाजिक संबंध आदि से जुड़े फैसले।

सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग्स का भी यही कहना था कि मनुष्य हजारों वर्षों के धीमे जैविक विकासक्रम का परिणाम है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मुकाबला नहीं कर सकता।

बिल गेट्स का मानना है कि यदि मनुष्य अपने से बेहतर सोचने-समझने वाली मशीन बना लेगा तो वह मनुष्य के अस्तित्व के लिए ही सबसे बड़ा खतरा बन सकती है।

शुद्धता और निष्पक्षता का प्रश्न

कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ विशाल और वृहद मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर ज्ञान अर्जित करती हैं और वे उपयोगकर्ता-प्रतिक्रिया के निरंतर प्रारूपण के माध्यम से अनुकूलित होती रहती हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इस परिदृश्य में यह सुनिश्चित कैसे किया जाएगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता की कलन-विधि को जिस प्रकार प्रशिक्षित किया गया है वह निष्पक्ष या पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार के सामने कड़ी चुनौती पेश करेगी। आने वाला वक्त AI का होगा। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2035 तक चीन अपने

सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का करीब 26 प्रतिशत और ब्रिटेन 10 प्रतिशत निवेश कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधित गतिविधियों और व्यापार पर करेगा। वहीं 2035 तक विश्व अर्थव्यवस्था में एआई 15.7 खरब डॉलर का योगदान करेगा।

इस परिप्रेक्ष्य में भारत भी एआई के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा सकता है। संभावना यह व्यक्त की जा रही है आने वाले कुछ वर्षों में एआई रोजगार के सामने कड़ी चुनौती पेश करेगी। इस वजह से दुनिया भर में वकीलों, डॉक्टरों, इंजीनियरों तथा शिक्षकों को बताया जा रहा है कि उन्नत तकनीक जल्द ही उनके दरवाजे पर दस्तक देने वाली है और मौलिक रूप से उनके काम की प्रकृति को बदल देगी तथा नई तकनीकी रूप से संपन्न लोगों की मांग करेगी। सवाल यह है कि क्या हमारा देश इस मामले में जरूरी निवेश कर पा रहा है? हाल के तमाम सर्वे बताते हैं कि अर्थव्यवस्था की बदलती जरूरतों के अनुरूप कौशल निर्माण कर पाने में भारत अभी बहुत पीछे है। देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम एक हजार विद्यार्थियों में से मात्र चार ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को अपने उच्च अध्ययन का विषय बनाते हैं जो गहरी चिंता की बात है। वर्तमान में भारत के 90 फीसद कर्मचारी अनौपचारिक क्षेत्र में हैं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जन्मी आर्थिक उथल-पुथल का आसानी से शिकार बन सकते हैं।

ऑटोमेशन के प्रसार के साथ ही संविदा नियुक्तियों की संख्या बढ़ेगी और वेतन में बहुत कमी आएगी। निर्माण उद्योग से जुड़े अनेक श्रमिक, जो अभी संविदा पर काम कर रहे हैं, 3D प्रिंटिंग तकनीक के आने के बाद तो बेकार ही हो जाएंगे। इसी प्रकार पूर्वी एशिया के देशों में रोबोट के जरिए होने वाली कृषि के सस्ते उत्पाद जब भारत में आने शुरू हो जाएंगे, तब भारत के किसानों की और भी

ज्यादा दुर्दशा हो जाएगी। वाहनों के क्षेत्र में पहले ही रोबोट प्रवेश कर चुके हैं। वहीं, दूसरी तरफ भारत के बैंक भी खर्चे नियंत्रित रखने के लिए मशीनीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं। वजह बताई जा रही है कि इससे उत्पादकता बढ़ेगी और गलतियां भी कम होंगी।

2. उच्च कौशल वाली नौकरियों की संख्या में इजाफा

पिछले कुछ वर्षों में बैंकों में भर्तियां कम हो गई हैं और जो हो भी रही हैं वे अग्रिम पंक्ति की होती हैं। एक आंकड़े के मुताबिक देश के आईटी और बीपीओ उद्यम में कम स्किल वाले कर्मियों की संख्या 2016 में घटकर 24 लाख रह गई थी जो 2028 में 15 लाख रह जाएगी। उसी स्टडी के अनुसार मध्यम कौशल वाली नौकरियों की संख्या 2028 तक बढ़कर 10 लाख हो जाएगी, जो 2016 में नौ लाख थी। उच्च कौशल वाली नौकरियों की संख्या भी 2028 तक बढ़कर पांच लाख हो जाएगी जो 2016 में 3.20 लाख थी।

3. तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार के लाखों मौके तैयार

आने वाले वर्षों में एआई, वर्चुअल रियलिटी, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, बिग डेटा एनालिटिक्स तथा क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकी क्षेत्रों में लाखों मौके भी तैयार होंगे जो उच्च गुणवत्ता और बढ़िया वेतन वाले होंगे। लेकिन इसके लिए भारत को तीन चुनौतियों से पार पाना होगा। पहला, अर्थव्यवस्था को ज्ञान आधारित बनाना होगा जिसके लिए जरूरत के अनुरूप शिक्षा के आधारभूत ढांचे पर व्यापक निवेश करना होगा और भारत की शिक्षा व्यवस्था को डिग्रियों के जाल से निकाल कौशल आधारित करना होगा। साथ ही चौथी औद्योगिक क्रांति से निपटने के लिए हमें ऐसे टास्क फोर्स बनाने होंगे, जो बहुआयामी कौशल से युक्त हों।

4. रोबोट के रोजगार को छीनने के खतरे

दूसरी चुनौती रोबोट के रोजगार को छीनने के खतरे से निपटने की होगी। रोबोट के रोजगार पर पड़ते प्रभाव को देखते हुए भारत में रोबोट के इस्तेमाल की इच्छुक कंपनियों पर इसके प्रयोग के लिए 'जॉब परमिट फॉर रोबोट' का शुल्क लगाया जाए। तीसरी चुनौती, तकनीकी बदलावों और नवाचार से सामंजस्य स्थापित करने की होगी। पूरी दुनिया में चौथी औद्योगिक क्रांति को लेकर अटकलें और तैयारियां चल रही हैं। ऐसे में भारत के लिए भी करीब पांच करोड़ तकनीकी सक्षम कर्मचारी तैयार करने की चुनौती है। लिहाजा डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ते रुझान को अपनाकर ही भारत बेरोजगारी की समस्या से प्रभावी ढंग से निपट सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत में शैशवावस्था में है और देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इसे लेकर प्रयोग किए जा सकते हैं। देश के विकास में इसकी संभावनाओं को देखते हुए उद्योग जगत ने सरकार को सुझाव दिया है कि वह उन क्षेत्रों की पहचान करे जहाँ एआई का इस्तेमाल लाभकारी हो सकता है। स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच बनाने में उत्पन्न बाधाओं को हल करने में मदद मिल सकती है। खासतौर पर ग्रामीण इलाकों में जहां कनेक्टिविटी की समस्या तथा स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में प्रशिक्षित कर्मियों की कमी है। एआई के प्रयोग से बीमारियों का पता लगाने, उनका निदान बताने, संभावित महामारी की प्रारंभिक पहचान और इमेजिंग डायग्नोस्टिक्स को सरल बनाया जा सकता है। चिकित्सा के क्षेत्र की तरह विनिर्माण, व्यापार, शिक्षा, बैंकिंग, रेल, साइबर सुरक्षा व अंतरिक्ष से जुड़ी खोजों में भी इस एआई तकनीक का इस्तेमाल भविष्य में काफी लाभदायक साबित हो सकता है। एआई के अलावा डाटा एनालिटिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स

और क्लाउड कंप्यूटिंग कुछ इस प्रकार की नई टेक्नोलॉजी हैं, जिनमें रोजगार और धन के लाभ की अपार संभावनाएँ हैं।

5. निजता को खतरा

तब क्या होगा यदि कोई कंपनी प्रशिक्षण डेटा सेट के माध्यम से जान-बूझकर या अन्य प्रकार से ग्राहकों या उपयोगकर्ताओं के वर्ग विशेष के पक्ष में पूर्वाग्रहों का प्रवेश करने में सफल हो जाए? आज के आपस में जुड़े विश्व में कंपनियों का एक बेहद छोटा समूह बड़ी मात्रा में डेटा इकट्ठा कर रहा है। इस समेकित डेटा तक पहुँच से न केवल किसी व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों, अंतःक्रियाओं आदि के विषय में जानकारी मिल सकती है, बल्कि स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त या अस्पष्ट रूप से चिह्नित रूढ़ियों के संदर्भ में भी सेंध लगाई जा सकती है। इस डेटा के माध्यम से कोई भी हमारी गतिविधियों, अतीत और पैटर्न अथवा किसी के सामान्य जीवन के प्रारूप के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी हासिल कर सकता है।

किसी व्यक्ति की ऑनलाइन गतिविधियों के डेटा तक अवैध पहुँच की संभावना के मद्देनजर देखें तो यह निजता के अधिकार के लिए जोखिम की स्थिति तैयार करती है। इससे न केवल ऑनलाइन, बल्कि किसी ऑफलाइन उपयोगकर्ता का निजता का अधिकार भी खतरे में पड़ सकता है।

6. प्रौद्योगिकीय बेरोजगारी

यह वह बेरोजगारी है जो नई प्रौद्योगिकियों के आने से उत्पन्न हो सकती है, अर्थात, मशीनों या प्रणालियों के आने से होने वाला रोजगार प्रतिस्थापन। इससे कार्यबल और बाजारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आएंगे; कुछ तरह की कार्य-भूमिकाएँ और

रोजगार चलन से बाहर हो जाएंगे, कुछ उद्योगों का मौलिक स्वरूप बदल जाएगा तथा रोजगार प्रारूप और संबंध पुनर्परिभाषित हो सकते हैं।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकीय क्रांति समृद्धि और विकास के तो बेहतर अवसर प्रस्तुत करती है, लेकिन यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि इस प्रौद्योगिकी का सही दिशा में अनुप्रयोग और प्रयोग किया जाएगा। इस संबंध में विश्व के विभिन्न हिस्सों में पहले से ही कुछ कदम उठाए जा रहे हैं, जैसे एक्स एआई (XAI) का प्रयोग और व्याख्या का अधिकार जो इसके इस्तेमाल किए जाने वाले मॉडलों को समझने का अवसर देता है।

यह भी कहा जा सकता है कि एआई पर एआई का प्रभाव पड़ता है, अर्थात एआई एक नई प्रौद्योगिकी को जनसामान्य तक पहुँचाता है और लोग इस प्रौद्योगिकी के अभ्यस्त हो जाते हैं। इसके बाद इसे एआई की तरह नहीं देखा जाता और फिर एक अगली नई प्रौद्योगिकी का चक्र शुरू हो जाता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि एआई और एआई आधारित अनुप्रयोगों के विकास पर अंकुश नहीं लगाया जाना चाहिए, लेकिन इसके विकास और प्रयोग के विभिन्न स्तरों की निगरानी और विनियमन की व्यवस्था बनी रहनी चाहिए।

सपनों का सफ़र

मनु कुमार सिंह,
लेखापरीक्षक

कहने को तो कुछ भी अधूरा नहीं होता,
सपनों का सफर यूँ ही पूरा नहीं होता।
हर दिल में छुपे होते हैं कुछ ख्वाब सुनहरे,
हर ख्वाब का मुकाम जरूरी नहीं होता।
आशाओं के दीप जलते हैं पल-पल में,
जीवन के इस लंबे सफर में मगर,
कई ख्वाब रास्तों में ही खो जाते हैं।
उनके सपनों को मिलती है पहचान,
पर न जाने कितनों के दिल में ही,
खामोश रह जाते हैं अरमान।
कभी हालात रोक लेते हैं कदम,
कभी किस्मत मोड़ देती है ये राहें,
चलते-चलते थक जाता है इंसान,
और सपने बस यादों में रह जाते हैं।
फिर भी ये दिल उम्मीद नहीं छोड़ता,
हर हार के बाद भी हौसला जोड़ता,
टूटे ख्वाबों के टुकड़ों से ही,
एक नया सपना फिर से संजोता।
क्योंकि यही है जीवन की सच्चाई,
अधूरे ख्वाबों में भी छुपी है गहराई,
सपनों का सफर खत्म नहीं होता कभी,
जो गिरकर भी उठना सीख जाए,
वही अपने सपनों को सच कर पाए

सिलिकॉन चिप बनाम धड़कता दिल

रूपम मेइति,

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कल्पना करें कि आप अपने जीवन में एक सुपरकंप्यूटर के साथ रेस लगा रहे हैं। अगर यह रेस सिर्फ गणित के सवाल हल करने या फोन बुक रटने की है, तो कंप्यूटर हर बार जीत जाएगा क्योंकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) नंबरों को जोड़ने और पैटर्न खोजने में सर्वश्रेष्ठ है। यह उस छात्र की तरह है जिसने पूरी किताब रट डाली है । परन्तु इसमें बस एक खामी है, इसे बस यह नहीं पता कि असल जिंदगी का मतलब क्या है। हम अक्सर यह सोचकर डर जाते हैं कि रोबोट हम पर कब्जा कर लेंगे क्योंकि वे बहुत तेज हैं, लेकिन 'रफ्तार' और 'समझदारी' में फर्क होता है। असल जिन्दगी में जीतने के लिए रफ्तार के साथ समझदारी भी होनी चाहिए, एक कैलकुलेटर पल भर में बड़ी से बड़ी गुणा-भाग कर सकता है, लेकिन उसे यह नहीं पता कि वह ऐसा *क्यों* कर रहा है। इंसानी दिमाग अलग है। यह सिर्फ डेटा प्रोसेस करने वाली मशीन नहीं है; यह एक कहानीकार है, सपने देखने वाला है और एक खोजकर्ता है। जहाँ एआई सिर्फ नियमों का पालन करता है, वहीं आपका दिमाग इस उलझन भरी एवं खूबसूरत दुनिया को बारीकी से समझने और उसमे अपनी भावना एवं समझदारी के फलस्वरूप लोगों के जीवन में एक खास स्थान बनाने में व्यस्त रहता है।

रोबोटिक कोड बनाम इंसानी समझ

मानव मस्तिष्क की सबसे शानदार बात यह है कि यह कितना कम खर्च में कितना ज्यादा काम करता है। एक ऐसे विशाल सुपरकंप्यूटर के बारे में सोचें जो एआई चलाता है—उसे एक बड़े कमरे, ढेर सारे कूलिंग फैन्स और इतनी बिजली की जरूरत होती है जिससे पूरा मोहल्ला रोशन हो सके। अब, अपने दिमाग के बारे में सोचें। यह आपके सोचने, सांस लेने, चलने और सपने देखने जैसे सभी काम करता है, और वह भी सिर्फ एक धीमे जलते हुए लाइटबल्ब जितनी ऊर्जा में। यह इंजीनियरिंग का एक चमत्कार है! एक सरल उदाहरण लें: बचपन में साइकिल चलाना सीखना। एक बच्चा शायद कुछ बार गिरेगा, लेकिन कुछ प्रयोजन के बाद ही बह "समझ" जाता है। वह संतुलन, गुरुत्वाकर्षण और गति को एक साथ महसूस कर अनगिनत क्रमचय – संयोजन का विश्लेषण कर लेता है। अगर आप किसी रोबोट को साइकिल चलाना सिखाना चाहें, तो आपको हजारों सिमुलेशन चलाने होंगे और जटिल कोड लिखने होंगे, फिर भी हवा का एक झोंका उसे गिरा सकता है। हमारा दिमाग बिजली घर की मदद लिए बिना तेजी से सीखने के लिए बना है।

नकल करना बनाम रचना करना

एआई चीजों की नकल करने में उस्ताद है। अगर आप इसे पिकासो जैसी पेंटिंग बनाने के लिए कहें, तो यह पिकासो के पुराने कामों को स्कैन करेगा और उन्हें मिलाकर कुछ वैसा ही बना देगा। यह उस रसोइए जैसा है जो रेसिपी तो पूरी तरह फॉलो करता है लेकिन कभी कोई नई डिश ईजाद नहीं कर सकता। इसके विपरीत, इंसान असली निर्माता होते हैं। हम सिर्फ नकल नहीं करते; हम चीजों

का निर्माण इसलिए करते हैं क्योंकि हम कुछ *महसूस* करते हैं। जब कोई संगीतकार दर्द भरा गीत लिखता है, तो वह इसलिए लिखता है क्योंकि उसका दिल टूटा है, न कि इसलिए कि उसने "दुखी शब्दों" के डेटाबेस का विश्लेषण किया है। एक दोस्त को लिखी गई हाथ की चिट्ठी को ही ले लीजिए। एआई उसके शब्द तो लिख सकता है, लेकिन वह उसमें वो वास्तविक असली भावनाएं, पुराने मजाक और वो यादें नहीं डाल सकता जो उस चिट्ठी को खास बनाती हैं। एआई 'कंटेंट' बनाता है, इंसान 'कला' बनाता है। भावनाओं की वह "चिंगारी" सिलिकॉन चिप्स नहीं खरीद सकतीं।

जब असली दुनिया उलझ जाती है

रोबोट्स को नियम पसंद हैं। उन्हें तब अच्छा लगता है जब दुनिया शतरंज के खेल की तरह हो, जहाँ प्यादे हमेशा एक ही तरह से चलते हैं। लेकिन असली दुनिया अराजक है और आए दिन नियम तोड़ती है। यहीं पर इंसानी दिमाग की चमक दिखाई देती है। हमारे पास "कॉमन सेंस" नाम की एक शक्ति है। उदाहरण के लिए, सड़क पर चल रही एक सेल्फ-ड्राइविंग कार को देखें। अगर सड़क पर एक प्लास्टिक की थैली उड़ती हुई आ जाए, तो कार शायद जोर से ब्रेक लगा दे क्योंकि उसे लगेगा कि यह कोई पत्थर है। एक इंसानी ड्राइवर देखेगा कि वह सिर्फ एक थैली है, हल्की है और कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगी, इसलिए वह गाड़ी चलाता रहेगा। हम अचानक आने वाली स्थितियों को तुरंत संभाल लेते हैं। हमें पता है कि अगर सड़क पर गेंद लुढ़कती हुई आई है, तो उसके पीछे कोई बच्चा भी भागता हुआ आ सकता है। एआई इन कड़ियों को जोड़ने में संघर्ष

करता है। अनिश्चित और नई परिस्थितियों में ढलने की हमारी यह क्षमता ही हमें असली 'सर्वाइवर' बनाती है।

निष्कर्ष: चेतना और जज्बात की जीत

अंत में, एआई एक शानदार औज़ार है, ठीक दूरबीन या हथौड़े की तरह। यह हमें काम को बेहतर करने में मदद करता है, लेकिन यह उस व्यक्ति की जगह नहीं ले सकता जो औज़ार को पकड़े हुए है। इस लड़ाई में मानव मस्तिष्क इसलिए जीतता है क्योंकि हमारे पास 'चेतना' है। हम जीत पर खुशी महसूस करते हैं, हार पर दुख, और तारों को देखकर जिज्ञासा। एक कंप्यूटर शतरंज के खेल में किसी ग्रैंडमास्टर को हरा तो सकता है, लेकिन कंप्यूटर को यह नहीं पता कि वह जीत गया है। वह जीत का रोमांच या अच्छे खेल का गर्व महसूस नहीं कर सकता। वह सिर्फ जीरो और वन (0 और 1) को प्रोसेस कर रहा है। चूंकि हमारे पास कल्पना, सहानुभूति, तमाम भावनाएं और अपने जीवन में अर्थ खोजने की क्षमता है, इसलिए मानव मस्तिष्क ब्रह्मांड का सबसे शक्तिशाली और महत्वपूर्ण प्रोसेसर बना हुआ है। मशीन हमें जवाब दे सकती है, लेकिन केवल इंसानी दिमाग ही जानता है कि कौन से सवाल पूछना जरूरी है।

उस शहर में मेरा फोटोग्राफी दौरा जो हमेशा आपका इंतजार करता

विप्रतीप दास,
लेखापरीक्षक

लोग कहते हैं कि अगर आप अमीर शहर देखना चाहते हैं, तो मुंबई जाएं। अगर आप शक्तिशाली शहर देखना चाहते हैं, तो दिल्ली जाएं। लेकिन अगर आप ऐसा शहर देखना चाहते हैं जिसके पास "आत्मा" है, तो आप कोलकाता आएं। यह एक ऐसी जगह है जो आपको सिर्फ देखने नहीं देती; यह मांग करती है कि आप इसे महसूस करें। जैसा कि प्रसिद्ध लेखक डोमिनिक लैपियर ने एक बार इस जगह के बारे में लिखा था, "यह सिर्फ एक शहर नहीं है; यह एक दुनिया है।"

इस दुनिया को खोजने का मेरा सफर किसी संग्रहालय या महल से शुरू नहीं हुआ। इसकी शुरुआत नदी के किनारे से हुई। हुगली नदी सिर्फ समुद्र की ओर बहने वाला पानी नहीं है; यह कोलकाता की समयरेखा है। यह वह मंच है जहां शहर प्रार्थना करता है, स्नान करता है, खेलता है और सांस लेता है। मैं इस कहानी को अपने कैमरे में कैद करना चाहता था, इन पलों को हमेशा के लिए एक बोतल में बंद कर लेना चाहता था।

दोपहर के करीब 4:00 बज रहे थे जब मैं अपने शुरूआती स्थान पर पहुंचा: प्रिंसेप घाट । सूरज धीरे-धीरे ढलना शुरू हो गया था, जो दिन की तेज धूप को एक नरम, सुनहरी शहद जैसी रोशनी में बदल रहा था। फोटोग्राफरों के लिए यह "जादुई समय" होता है, जब परछाइयां लंबी हो जाती हैं और हर चीज थोड़ी और खूबसूरत लगने लगती है।

भाग 1: प्रिंसेप घाट के सफेद स्तंभ

प्रिंसेप घाट में कदम रखना समय के एक द्वार से गुजरने जैसा लगता है। आप ट्रैफिक के शोर—हॉर्न बजाती बसें और चिल्लाते कंडक्टरों को पीछे छोड़ देते हैं और शांत भव्यता की जगह में प्रवेश करते हैं। सबसे पहले जो चीज आप देखते हैं वह है स्मारक खुद: ऊंचे, राजसी स्तंभों वाली एक शानदार सफेद संरचना। इसे 1841 में जेम्स प्रिंसेप नाम के एक व्यक्ति की याद में बनाया गया था, जो एक शानदार विद्वान थे और जिन्होंने भारत के प्राचीन शिलालेखों को पढ़ा था। वहां खड़े होकर, गहरे नीले आसमान के खिलाफ उन सफेद स्तंभों को देखते हुए, मुझे महान भारतीय कवि रवींद्रनाथ टैगोर की एक बात याद आ गई: "आप केवल पानी को खड़े होकर और उसे घूरकर समुद्र पार नहीं कर सकते।" उसी तरह, आप इस शहर को केवल कार की खिड़की से देखकर नहीं समझ सकते; आपको इसकी धूल में खड़ा होना होगा और इसके पत्थरों को छूना होगा।

मैं स्मारक के चारों ओर घूमा, ठंडे पत्थर पर अपना हाथ फेरा। सफेद पेंट कुछ छोटी जगहों पर उखड़ रहा था, जो इमारत की उम्र दिखा रहा था, लेकिन इसने इसे मेरे लिए और भी सुंदर बना दिया। यह असली लग रहा था। वह जगह जीवन से भरी थी, सिर्फ इतिहास से नहीं। मैंने देखा कि युवा कॉलेज छात्र घेरे में बैठे हंस रहे थे और गिटार बजा रहे थे। मैंने जोड़ों को हाथों में हाथ डाले चलते देखा, जो इस व्यस्त शहर में एक शांत पल तलाश रहे थे।

मैंने अपना कैमरा उठाया और एक शॉट तैयार किया। मैं विरोधाभास दिखाना चाहता था—सामने पुराने, शांतिपूर्ण सफेद स्तंभ, और उनके ऊपर मंडराता हुआ विशाल, आधुनिक विद्यासागर सेतु (दूसरा हुगली पुल) । यह एक

ही फ्रेम में दो अलग-अलग युगों के मिलने की तस्वीर थी: 19वीं सदी की खामोशी और 20वीं सदी की दौड़ती हुई फौलादी महत्वाकांक्षा।

भाग 2: हुगली पर सफर और दूसरा पुल

नदी को वास्तव में देखने के लिए, आपको नदी पर जाना होगा। मैं पत्थर की सीढ़ियों से पानी के किनारे तक गया। नदी से गीली मिट्टी, इंजन के तेल की गंध आ रही थी। वहां दर्जनों छोटी, लकड़ी की नावें ज्वार में डोल रही थीं। ये नावें कोई फैंसी यॉट नहीं हैं; वे साधारण, हाथ से बनी लकड़ी की नावें हैं, जिन्हें अक्सर चमकीले हरे और नीले रंगों में रंगा जाता है, जिनके ऊपर धूप से बचाने के लिए एक छोटी घुमावदार छत होती है। मैंने एक मांझी को हाथ हिलाया, एक बुजुर्ग आदमी जिसका चेहरा हजारों कहानियों के नक्शे जैसा लग रहा था। हमने एक कीमत तय की, और मैं नाव में चढ़ गया। जैसे ही मैं लकड़ी की बेंच पर बैठा, नाव धीरे से हिली। मांझी ने एक लंबे बांस के डंडे से हमें किनारे से दूर धकेला, और अचानक, शहर का शोर गायब हो गया, जिसकी जगह पानी की लयबद्ध छप-छप ने ले ली। जैसे-जैसे हम नदी के बीच की ओर बढ़ रहे थे, मुझे भारत के पहले प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू के शब्द याद आए, जिन्होंने गंगा के बारे में कहा था, "यह नदी अपने लोगों की प्रिय है, जिसके चारों ओर उनकी यादें, उनकी उम्मीदें और डर, उनके जीत के गीत, उनकी विजय और उनकी पराजय गुंथी हुई हैं।" भले ही यह हुगली है, आप उसी प्राचीन जुड़ाव को महसूस करते हैं।

हमारे नीचे का पानी गहरा, मटमैला भूरा था, जो तेज धाराओं के साथ घूम रहा था। लेकिन जैसे ही सूरज डूबने लगा, पानी का रंग बदल गया। यह आसमान की नारंगी आग को प्रतिबिंबित करते हुए तरल सोने की चादर में बदल

गया। हम ठीक विद्यासागर सेतु के नीचे से गुजरे। इस पुल के पैमाने को वास्तव में समझने का यही एकमात्र तरीका है। जब आप छोटी नाव से ऊपर देखते हैं, तो पुल विशाल लगता है। यह आसमान में एक विशाल वाद्ययंत्र की तरह लटका हुआ है, जिसके केबल तारों की तरह फैले हुए हैं जो बजाए जाने का इंतजार कर रहे हैं। मैं नाव की बेंच पर पीछे झुक गया और सीधे ऊपर देखते हुए एक फोटो ली, जिसमें बादलों को काटती हुई पुल की स्टील की रेखाएं कैद थीं। स्टील और कंक्रीट के इतने विशाल निर्माण के नीचे एक छोटी लकड़ी की नाव में तैरते हुए मुझे बहुत छोटा महसूस हुआ। मांझी हमें धीरे-धीरे ले जा रहा था। एकमात्र आवाज़ चप्पू की छप-छप थी—छप, चरचराहट, छप। यह अविश्वसनीय रूप से शांतिपूर्ण था। मैंने दूसरी नावों को गुजरते देखा। एक में पर्यटकों का परिवार सेल्फी ले रहा था; दूसरे में फूल लदे थे। मैंने डूबते सूरज के खिलाफ मांझी की परछाई की एक तस्वीर ली। उस पल में, ढलती रोशनी और बहती नदी के साथ, समय जैसे थम गया था।

भाग 3: पटरियों के किनारे की सैर

जब तक हम वापस किनारे पर पहुंचे, सूरज गायब हो चुका था। आसमान अब गहरा, उदास नीला था—जिसे फोटोग्राफर "ब्लू ऑवर" कहते हैं। यह मेरी यात्रा के अगले चरण का समय था: बाबू घाट की ओर उत्तर दिशा में पैदल चलना। प्रिंसेप घाट से बाबू घाट तक का रास्ता लगभग दो किलोमीटर लंबा है। यह एक सुंदर सैरगाह है जो नदी के ठीक बगल में चलती है। लेकिन जो चीज़ इसे खास बनाती है वह यह है कि यह एक रेलवे ट्रैक—सर्कुलर रेलवे—के बगल में भी चलती है।

यह सैर इंद्रियों पर सबसे अच्छे तरीके से एक हमला है। मेरी बाईं ओर अंधेरी, शांत नदी थी। मेरी दाईं ओर रेलवे लाइन और प्राचीन पेड़ों की कतार थी। हर दस मिनट में, एक छोटी लोकल ट्रेन तेज़ सीटी के साथ पटरियों पर पहियों की चीखती आवाज़ करती हुई गुज़रती थी। इसने हमारी सैर में एक किरकिरा, औद्योगिक संगीत जोड़ दिया, जो याद दिलाता है कि यह एक काम करने वाला शहर है। यहाँ की हवा स्वादिष्ट सुगंधों से भरी थी। हर जगह स्ट्रीट वेंडर थे। मुझे सरसों के तेल में मिली हुई झालमुड़ी की तीखी, चटपटी महक आ रही थी। मुझे कोयले की आग पर बड़ी केतली में उबल रही चाय की सौंधी महक आ रही थी। मैं चाय की एक छोटी दुकान पर रुका। दुकानदार ने कुल्हड़—लाल मिट्टी से बना एक छोटा कप—में गरमागरम चाय डाली। मिट्टी के कप में चाय पीना एक खास अनुभव है; मिट्टी चाय को एक अद्भुत, सौंधा स्वाद देती है। जैसे ही मैंने गर्म चाय की चुस्की ली, मैंने वहां से गुजरते लोगों को देखा। वहां ऑफिस से घर भागते कर्मचारी थे, सैर के लिए निकले परिवार थे।

मैंने उन चेहरों की तस्वीरें लीं जो मैंने देखे—चाय वाले की एकाग्र आंखें, आइसक्रीम कोन के साथ हंसता हुआ बच्चा, स्ट्रीटलाइट के नीचे अखबार पढ़ता हुआ एक बूढ़ा आदमी। जैसा कि प्रसिद्ध फोटोग्राफर एंसल एडम्स ने कहा था, "आप तस्वीर लेते नहीं हैं, आप उसे बनाते हैं।" मैं ऐसी तस्वीरें बनाने की कोशिश कर रहा था जो शहर की साधारण, रोजमर्रा की खुशी को दिखा सकें।

भाग 4: बाबू घाट की कच्ची रूह

जैसे-जैसे मैं उत्तर की ओर चलता गया, माहौल बदलने लगा। सजाए गए बगीचे और पक्के रास्ते किसी पुरानी और कच्ची चीज़ में बदल गए। मैं बाबू घाट के करीब पहुंच रहा था। अगर प्रिंसेप घाट कोलकाता का विनम्र, अच्छे

कपड़ों वाला पक्ष है, तो बाबू घाट इसका कच्चा, धड़कता हुआ दिल है। 1830 में राशमोनी नाम की एक शक्तिशाली रानी द्वारा निर्मित, यह जगह ऐसी लगती है जैसे दो सौ वर्षों में बदली ही नहीं है। प्रवेश द्वार ऊंचे स्तंभों वाली एक बड़ी, जर्जर इमारत है। यह भीड़भाड़ वाली, अराजक और पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर देने वाली जगह थी। हवा अगरबत्तियों और छोटी आग के धुएं से घनी थी। मैंने पुजारियों की कतारें देखीं जो लकड़ी के चबूतरों पर बैठे प्राचीन मंत्रों का जाप कर रहे थे। मैंने उनकी तस्वीर ली, इसने मुझे लेखक ताहिर शाह के एक उद्धरण की याद दिला दी: "कलकत्ता ही एकमात्र ऐसा शहर है जिसे मैं जानता हूं जहां आपको अजनबियों को रोकने और उनसे उनके दिन के बारे में पूछने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है।" यहाँ, हर कोई जुड़ा हुआ लग रहा था, हर कोई एक ही कहानी का हिस्सा था।

भाग 5: अग्नि और आस्था - गंगा आरती

जैसे ही मुझे लगा कि मैंने शाम की ऊर्जा का शिखर देख लिया है, मैंने एक ऐसी आवाज़ सुनी जो मेरे सीने में गहराई तक गूंज गई। यह शंख बजने की आवाज़ थी—एक लंबी, तेज़, पवित्र ध्वनि। यह बाजे कदमताला घाट से आ रही थी, जो बाबू घाट के ठीक बगल में है। मैं जल्दी से वहां गया और देखा कि एक बड़ी भीड़ जमा हो रही है। यह गंगा आरती का समय था, नदी देवी के सम्मान में एक अनुष्ठान। यह कोलकाता में एक अपेक्षाकृत नया समारोह है, जो वाराणसी की प्रसिद्ध प्रार्थनाओं से प्रेरित है, लेकिन यह जल्दी ही एक देखने लायक कार्यक्रम बन गया है। मुझे सीढ़ियों पर जगह मिली और मैं बैठ गया। मेरे सामने, रेशमी लाल और सुनहरे कपड़ों में सजे युवा पुजारियों का एक समूह नदी की ओर मुंह करके छोटे चबूतरों पर खड़ा था। उनके पीछे, नदी एकदम काली, शांत

और विशाल थी। समारोह संगीत के साथ शुरू हुआ—घंटियां बज रही थीं, ढोल बज रहे थे, और लोग भक्ति के गीत गा रहे थे। फिर, पुजारियों ने बड़े, भारी पीतल के दीये उठाए। इन दीयों में कई परतें थीं, और हर परत जलते हुए कपूर से भरी थी।

जैसे-जैसे संगीत तेज़ होता गया, पुजारी उन भारी दीयों को एकदम सही लय में घुमाने लगे। यह आग का एक शानदार नृत्य था। लपटें ऊपर उठीं, अंधेरे में सुनहरी रोशनी की लकीरें छोड़ती हुई। कपूर और अगरबत्ती की महक तेज़ और मीठी थी। मैंने अपने कैमरे को आग की प्राकृतिक रोशनी को कैद करने दिया। तस्वीरें जादुई थीं। उन्होंने लपटों की चमक से रोशन पुजारियों के दृढ़ चेहरों को दिखाया, और नदी के काले पानी पर आग को पिघले हुए सोने की तरह छलकते हुए दिखाया।

भाग 6: मिलेनियम पार्क

आरती की आध्यात्मिक गर्मी को पीछे छोड़ते हुए, मैंने स्ट्रैंड रोड के साथ उत्तर की ओर अपनी पैदल यात्रा जारी रखी। लगभग दस मिनट के बाद, दृश्य फिर से नाटकीय रूप से बदल गया। मैं मिलेनियम पार्क पहुंचा। यदि बाबू घाट अतीत था, तो मिलेनियम पार्क आधुनिक भविष्य शहर का प्रयास है। यह नदी के किनारे से पुनः प्राप्त पार्क भूमि का एक लंबा, सजा हुआ विस्तार है। यहाँ, टिमटिमाते तेल के दीयों की जगह चमकदार नियॉन लाइटों ने ले ली थी। माहौल बिल्कुल अलग था। यह एक मेले जैसा लग रहा था। बैंगनी और हरे रंग में चमकते हुए एलईडी पेड़ थे। बच्चों के लिए मनोरंजन की सवारी थी—छोटी चकरी (carousels) जो चमकती रोशनी के साथ घूम रही थीं। अगरबत्ती की जगह हवा में पॉपकॉर्न और कैंडी फ्लॉस (बुढ़िया के बाल) की महक थी।

एक फोटोग्राफर के लिए, यह रंगों के खेल का मैदान था। मैंने सवारी की गति को कैद करने के लिए अपनी शटर गति धीमी कर दी, जिससे वे चमकीले रंगों की धुंध में बदल गए। मैंने बेंचों पर बैठे परिवारों की तस्वीरें लीं, जो आइसक्रीम खा रहे थे और नदी की ओर देख रहे थे। यह फुरसत की जगह थी, भीड़भाड़ वाले शहर के लिए एक "फेफड़ा" जहां लोग बस सांस ले सकते थे। विरोधाभास चौंकाने वाला था—बस एक किलोमीटर पीछे, लोग मोक्ष के लिए प्रार्थना कर रहे थे; यहाँ, वे बस एक मजेदार शनिवार की रात बिताने की कोशिश कर रहे थे। इसने मुझे दिखाया कि इस शहर में हर चीज के लिए जगह है: पवित्र और अपवित्र, पुराने अनुष्ठान और आधुनिक मौज-मस्ती।

भाग 7: स्टील का सम्राट - हावड़ा ब्रिज

मैं मिलेनियम पार्क की रेलिंग के बिल्कुल किनारे तक गया और उत्तर की ओर देखा। और वह वहां था। ग्रैंड फिनाले। पूर्व का प्रतीक। हावड़ा ब्रिज। आधिकारिक तौर पर रबीन्द्र सेतु के रूप में जाना जाने वाला यह पुल स्टील का एक राक्षस है। विद्यासागर सेतु के विपरीत, जिसे हमने पहले देखा था और जो अपने केबलों के साथ हल्का और हवादार दिखता है, हावड़ा ब्रिज भारी, औद्योगिक और अविश्वसनीय रूप से मजबूत दिखता है। यह एक कैंटिलीवर पुल है, जिसका अर्थ है कि यह नदी के बीच में बिना किसी खंभे के पानी के ऊपर लटका हुआ है। किंवदंती है कि इसे एक भी नट या बोल्ट के बिना बनाया गया था, जो पूरी तरह से रिवेट्स (rivets) द्वारा एक साथ जुड़ा हुआ है।

रात में, पुल बदल जाता है। यह बैंगनी और सुनहरे रंग की रोशनी में जगमगा रहा था। यह नदी के काले गले में लिपटे एक चमकते हुए हार जैसा लग रहा था। मैंने इसे स्थिर रखने के लिए अपना कैमरा रेलिंग पर सेट किया।

मिलेनियम पार्क से दृश्य एकदम सही है क्योंकि आपको अग्रभूमि (foreground) में काला पानी और पृष्ठभूमि (background) को भरने वाला विशाल स्टील का ढांचा मिलता है। मैंने एक लॉन्ग एक्सपोज़र शॉट लिया। इसने पानी को रेशम जैसा चिकना बना दिया और पुल के ऊपर से गुजरने वाली कारों की रोशनी को लाल और सफेद लंबी लकीरों में बदल दिया।

उस पुल को देखते हुए, मैंने उन लाखों लोगों के बारे में सोचा जो हर दिन इसे पार करते हैं। यह दुनिया का सबसे व्यस्त पुल है। जैसा कि आइजैक न्यूटन ने एक बार कहा था, "हम बहुत सारी दीवारें बनाते हैं और पर्याप्त पुल नहीं।" लेकिन यहाँ, इस शहर में, यह पुल अंतिम प्रतीक है। यह हावड़ा के व्यस्त रेलवे स्टेशन को कोलकाता के हलचल भरे बाजारों से जोड़ता है। यह गांव को शहर से जोड़ता है। यह अतीत को वर्तमान से जोड़ता है।

निष्कर्ष: पानी में लिखी एक कहानी

लंबी सैर से मेरे पैर थक गए थे, लेकिन मेरा दिल भरा हुआ था। बस कुछ ही घंटों में, मैंने मानवीय अनुभव के पूरे स्पेक्ट्रम (विस्तार) की यात्रा कर ली थी। मैंने प्रिंसेप घाट से शुरुआत की थी, ब्रिटिश राज के औपनिवेशिक सपनों को देखते हुए। मैं उस कालातीत नदी पर तैरा जिसने राजाओं और साम्राज्यों को बनते और बिगड़ते देखा है। मैं स्ट्रीट फूड स्टालों के जायकों के विस्फोट से गुजरा था। मैंने आरती में प्राचीन, उग्र आस्था देखी थी। मैंने मिलेनियम पार्क में परिवारों की आधुनिक खुशी देखी थी। और अंत में, मैं शहर के स्टील के संरक्षक, शक्तिशाली हावड़ा ब्रिज के सामने खड़ा था।

यह फोटोग्राफी टूर सिर्फ तस्वीरें लेने से कहीं अधिक था। यह "देखने" का एक सबक था। इसने मुझे सिखाया कि सुंदरता हमेशा साफ और परिपूर्ण

नहीं होती है। कभी-कभी, सुंदरता एक पुरानी इमारत के उखड़ते पेंट में, नदी के गंदे पानी में, चाय बेचने वाले की थकी हुई मुस्कान में, या पुल के ठंडे स्टील में होती है।

जैसे ही मैंने अपना कैमरा अपने बैग में रखा, मैंने आखिरी बार नदी को देखा। हावड़ा ब्रिज की रोशनी पानी में प्रतिबिंबित हो रही थी, धारा के साथ नाच रही थी। नदी बहती रही, शांत और भारी, लाखों लोगों की कहानियों को समुद्र की ओर ले जाती हुई। मैं रात के अंधेरे में चला गया, यह जानते हुए कि मैंने कोलकाता की अनंत आत्मा का एक छोटा सा टुकड़ा कैद कर लिया है, एक कहानी जो स्याही में नहीं, बल्कि रोशनी और पानी में लिखी गई है।

संग्रहालय, त्रिपुरा

प्रसन्नता का कोई मार्ग नही है, प्रसन्नता ही मार्ग है

विशाल सिंह,
लेखापरीक्षक

प्रसन्नता का अर्थ केवल किसी विशेष स्थिति तक पहुँचने में नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षण में आनन्द और संतोष का अनुभव करना है। यह विचार हमें यह सिखाता है कि प्रसन्नता कोई गंतव्य नहीं है जिसे प्राप्त किया जा सके, बल्कि यह एक जीवनशैली है। इस लेख में, हम इस विचार की गहराई में जाएंगे और यह समझने की कोशिश करेंगे कि कैसे प्रसन्नता हमारे जीवन का मार्ग हो सकती है और क्यों इसे एक अंतहीन खोज के रूप में नहीं देखना चाहिए।

प्रसन्नता को अक्सर बाहरी कारकों, जैसे संपत्ति, सफलता और प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता है। यह धारणा है कि जब हम चीजों को प्राप्त कर लेंगे, तभी हमें प्रसन्नता मिलेगी। किन्तु यह विचार वास्तविकता से बहुत दूर है। प्रसन्नता बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक स्थिति है। यह हमारे मानसिक और भावनात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, न कि भौतिक उपलब्धियों पर।

महात्मा गांधी और बुद्ध जैसे महान विचारकों ने भी प्रसन्नता के आंतरिक स्त्रोत पर बल दिया है। उन्होंने यह सिखाया कि वास्तविक प्रसन्नता केवल तब मिल सकती है जब हम अपने भीतर शांति और संतोष प्राप्त करें।

वर्तमान युग में, जहाँ लोग धन, शक्ति और प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ में लगे हुए हैं, प्रसन्नता की खोज और भी जटिल हो गई है। लोग सोचते हैं कि यदि वे अधिक धन अर्जित करेंगे, अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, तो वह प्रसन्नता को प्राप्त कर सकेंगे। यद्यपि यह मानसिकता उन्हें निरंतर असंतोष और तनाव की स्थिति में धकेलती है।

भारत जैसे विकासशील देश में भी, जहाँ आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ मूल रूप से अभी भी विद्यमान हैं, प्रसन्नता की यह खोज महत्वपूर्ण हो जाती है। आज जहाँ लोग आर्थिक सुरक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहीं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे भी एक मुख्य समस्या के रूप में उभरे हैं। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के अनुसार, भारत का स्थान प्रसन्नता के स्तर में बहुत पीछे है, जो यह दर्शाता है कि हमें प्रसन्नता को समझने और उसे अपने जीवन में शामिल करने की आवश्यकता है।

मनोविज्ञान में, प्रसन्नता को 'सकारात्मक मनोविज्ञान' के दृष्टिकोण से देखा जाता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मार्टिन सेलिगमैन ने 'सकारात्मक मनोविज्ञान' के सिद्धांत को प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने बताया कि प्रसन्नता जीवन के तीन महत्वपूर्ण स्तंभों पर आधारित है: आनंद, संलग्नता और अर्थपूर्ण जीवन।

आनंद - जब हम छोटे-छोटे पलों में खुशी पाते हैं। **संलग्नता** - जब हम अपने काम और स्थितियों में पूर्ण रूप से शामिल होते हैं। **अर्थपूर्ण जीवन** - जब हम अपने जीवन को एक उद्देश्य और दिशा देते हैं।

भारत की प्राचीन परंपराएँ, विशेष रूप से योग और ध्यान, प्रसन्नता को जीवन का अभिन्न हिस्सा मानती हैं। योग के सिद्धांतों में यह बताया गया है कि वास्तविक प्रसन्नता तब मिलती है जब हम अपने मन और शरीर के बीच संतुलन बनाए रखते हैं।

योग एवं ध्यान मानसिक शांति और आंतरिक प्रसन्नता के साधन हैं। ये हमें बाह्य जगत के तनावों और चिंताओं से ऊपर उठने में मदद करते हैं तथा हमें यह सिखाते हैं कि प्रसन्नता एक आंतरिक विषय है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से भारत ने विश्व भर में प्रसन्नता और मानसिक शांति की इस परंपरा को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय दर्शन में प्रसन्नता को मोक्ष, यानी आत्मा की मुक्ति के रूप में देखा जाता है। यह जीवन के चक्र से मुक्त होने की स्थिति है, जहाँ व्यक्ति पूर्ण शांति और आनंद की प्राप्ति करता है। भगवद गीता में, श्री कृष्ण ने अर्जुन को सिखाया कि निष्काम कर्म योग द्वारा व्यक्ति वास्तविक प्रसन्नता और शांति प्राप्त कर सकता है।

गीता के अनुसार, जब व्यक्ति अपने कर्मों को फल की अपेक्षा के बिना करता है, तब उसे वास्तविक प्रसन्नता मिलती है। यह विचार आधुनिक समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ लोग अपने कार्यों के परिणामों को लेकर चिंतित रहते हैं और इससे मानसिक तनाव का सामना करते हैं।

प्रसन्नता केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामूहिक और सामाजिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। एक समाज, जहाँ लोग संतुलन और प्रसन्नता के साथ जीवन जीते हैं, वह समाज स्थिर तथा समृद्ध होता है। भारत जैसे विविधता वाले देश में, जहाँ अलग-अलग संस्कृतियाँ, धर्म और जातियाँ एक साथ रहती हैं, सामाजिक संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है। प्रसन्नता केवल तभी संभव है जब समाज में समानता, न्याय और आपसी सम्मान की भावना हो। भारत की सामाजिक नीतियाँ जैसे 'सबका साथ सबका विकास' इस दिशा में प्रयास कर रही हैं कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर और संसाधन प्राप्त हों, जिससे उनकी व्यक्तिगत और सामाजिक प्रसन्नता अक्षुण्ण रहे।

प्रसन्नता का प्रत्यक्ष संबंध शासन और नीति निर्माण से भी है। यदि सरकार जनहितैषी नीतियां बनाती है और सामाजिक न्याय, समानता तथा अवसरों की उपलब्धता को प्राथमिकता देती है, तो समाज में प्रसन्नता का स्तर बढ़ता है।

'प्रसन्नता तब होती है जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं, और करते हैं, सब एक साथ हों' - महात्मा गांधी"

वर्तमान समय में पूर्वोत्तर भारत

शुभम कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रस्तावना: पूर्वोत्तर भारत हमारे देश का एक अनोखा और महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं, घनी हरियाली और विविध संस्कृतियों के कारण भारत के अन्य भागों से बिल्कुल अलग पहचान रखता है। यहाँ की भाषाएँ, परंपराएँ, खान-पान और जीवनशैली देखकर ऐसा लगता है मानो हम किसी अलग ही दुनिया में पहुँच गए हों। इस क्षेत्र में कुल आठ राज्य शामिल हैं जो लंबे समय तक देश की मुख्यधारा से कुछ दूर रहे। इसके पीछे कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ, ऐतिहासिक कारण, सीमावर्ती स्थिति और विकास संसाधनों की कमी जैसे अनेक कारण रहे हैं। हालाँकि वर्तमान समय में यह क्षेत्र तीव्र गति से विकास की ओर बढ़ रहा है, फिर भी कुछ सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: पूर्वोत्तर भारत का इतिहास देश के अन्य क्षेत्रों से भिन्न रहा है। यहाँ के अधिकांश इलाके पहले स्वतंत्र रियासतों अथवा जनजातीय शासन प्रणाली के अधीन थे। असम में अहोम राजवंश ने लगभग छह सौ वर्षों तक शासन किया , मणिपुर और त्रिपुरा में राजतंत्र की परंपरा रही। नागालैंड, मिज़ोरम और मेघालय जैसे क्षेत्रों में जनजातीय समाज की मजबूत उपस्थिति थी, जहाँ लोग अपनी पारंपरिक मान्यताओं और सामाजिक नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करते थे।

ब्रिटिश शासनकाल में इस क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन आए। असम में चाय बागानों की स्थापना हुई, रेल मार्ग और सड़कों का निर्माण हुआ तथा बाहरी क्षेत्रों से

श्रमिकों का आगमन हुआ। इससे व्यापार और रोजगार के अवसर तो बढ़े, परंतु स्थानीय समाज की संरचना में भी महत्वपूर्ण बदलाव आए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने इस क्षेत्र के पुनर्गठन पर विशेष ध्यान दिया और नए राज्यों का गठन किया ताकि यहाँ के लोगों को उचित प्रतिनिधित्व और अधिकार मिल सकें।

भौगोलिक विशेषता और सिलीगुड़ी कॉरिडोर: पूर्वोत्तर भारत की भौगोलिक स्थिति अत्यंत संवेदनशील और विशिष्ट है। यह संपूर्ण क्षेत्र भारत के शेष भाग से केवल एक संकीर्ण भू-पट्टी के माध्यम से जुड़ा हुआ है, जिसे 'चिकन नेक' या सिलीगुड़ी कॉरिडोर के नाम से जाना जाता है। यह मार्ग मात्र 20-25 किलोमीटर की चौड़ाई वाला है और संपूर्ण पूर्वोत्तर को देश के अन्य भागों से जोड़ने का एकमात्र स्थलीय मार्ग है।

इस संकरे मार्ग के कारण सुरक्षा, परिवहन और व्यापार से संबंधित अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। किसी भी प्राकृतिक आपदा या अंतरराष्ट्रीय तनाव की स्थिति में पूर्वोत्तर का शेष भारत से संपर्क प्रभावित हो सकता है। हालाँकि सरकार सड़क, रेल और वैकल्पिक मार्गों के विकास पर निरंतर कार्य कर रही है जिससे भविष्य में यह समस्या न्यूनतम हो सके।

वर्तमान परिदृश्य: असम पूर्वोत्तर भारत का सबसे प्रमुख राज्य है। यहाँ चाय उद्योग, कृषि, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे महत्वपूर्ण संसाधन उपलब्ध हैं। गुवाहाटी जैसे शहर शिक्षा, व्यापार और चिकित्सा सेवाओं के प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रहे हैं। नवीन सड़क परियोजनाओं, पुलों और रेलवे लाइनों से यातायात व्यवस्था में सुधार हुआ है। परंतु वार्षिक बाढ़, सीमित संसाधन, बेरोज़गारी और

बांग्लादेश से अवैध प्रवासन जैसी समस्याएँ अभी भी गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

मणिपुर खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए विख्यात है। यहाँ के खिलाड़ियों ने बॉक्सिंग, वेटलिफ्टिंग और हॉकी जैसे खेलों में राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाया है। परंतु हाल के वर्षों में विभिन्न समुदायों (विशेषतः मौइति और कुकी) के मध्य तनाव और हिंसक घटनाओं ने राज्य की शांति को प्रभावित किया है। भूमि अधिकार और सांस्कृतिक पहचान से जुड़े मुद्दों ने स्थिति को जटिल बनाया है। वहाँ वर्तमान में राष्ट्रपति शासन भी लगाया जा चुका है।

नागालैंड में दीर्घकालीन संघर्ष और आंदोलन की स्थिति रही है। वर्तमान में परिस्थितियाँ पूर्व की तुलना में काफी बेहतर हैं। हिंसक घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है और सरकार तथा विभिन्न समूहों के बीच बातचीत जारी है। अब नागालैंड अपने सांस्कृतिक त्योहारों, संगीत और पर्यटन के लिए जाना जाता है।

त्रिपुरा का इतिहास बांग्लादेश से आए शरणार्थियों से जुड़ा है, जिसके कारण जनजातीय और गैर-जनजातीय समुदायों के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई। हाल ही मे कॉकबोरोक भाषी लोगों द्वारा बांग्ला की जगह अंग्रेजी लिपि के इस्तेमाल को लेकर भी आंदोलन चलाए गए थे।

मेघालय अपनी असाधारण प्राकृतिक सुंदरता और मातृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है। शिलांग शिक्षा और संगीत का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। पर्यटन उद्योग से राज्य को आर्थिक लाभ हो रहा है, परंतु अवैध खनन जैसी समस्याएँ भी विद्यमान हैं। स्थानीय जनजाति और बाहर से प्रवासन किए हुए कामकाजी वर्ग के बीच अक्सर तनाव देखने को मिलता है.

मिज़ोरम को पूर्वोत्तर भारत का सर्वाधिक शांत राज्य माना जाता है। पूर्व में यहाँ विद्रोह और हिंसा की घटनाएँ होती थीं, परंतु शांति समझौते के पश्चात स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। आज मिज़ोरम शिक्षा और सामाजिक सद्भाव का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। हाल में ही मिजोरम रेल मार्ग जुड़ चुका है.

अरुणाचल प्रदेश एक अत्यंत महत्वपूर्ण सीमावर्ती राज्य है। यहाँ चीन के साथ सीमा विवाद दीर्घकाल से चला आ रहा है। चीन अरुणाचल प्रदेश के कुछ भागों पर दावा करता है, जिसे भारत सरकार ने स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया है। हाल के वर्षों में भारत सरकार यहाँ सड़कों, पुलों और हवाई पट्टियों का निर्माण कर रही है जिससे सुरक्षा और विकास दोनों को बल मिल रहा है।

सिक्किम पूर्व में एक स्वतंत्र राजतंत्र था। 1975 में जनमत संग्रह के पश्चात यह भारत का अंग बना। आज सिक्किम जैविक कृषि और पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन के लिए विश्व स्तर पर पहचाना जाता है।

संसाधनों की चुनौती: पूर्वोत्तर भारत प्राकृतिक संपदा से समृद्ध होते हुए भी संसाधनों की कमी का सामना करता है। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण बड़े उद्योगों की स्थापना चुनौतीपूर्ण है। विद्युत आपूर्ति, उच्च शिक्षा संस्थान, स्वास्थ्य सुविधाएँ और रोजगार के अवसर सीमित हैं। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में युवा शिक्षा और रोजगार के लिए देश के अन्य भागों की ओर पलायन करते हैं।

सीमावर्ती मुद्दे और चुनौतियाँ: म्यांमार से सटी सीमा के कारण एक गंभीर समस्या नशीले पदार्थों की तस्करी की है। म्यांमार "गोल्डन ट्रायंगल" क्षेत्र के निकट स्थित है, जहाँ से मादक पदार्थों की अवैध आपूर्ति होती है। इसका

दुष्प्रभाव मणिपुर और मिज़ोरम जैसे राज्यों में देखा जा रहा है, जहाँ युवाओं में नशीली दवाओं के सेवन की समस्या बढ़ रही है।

बांग्लादेश से अवैध प्रवासन भी एक जटिल मुद्दा है जो विशेषकर असम में जनसांख्यिकीय संतुलन और सामाजिक तनाव को प्रभावित कर रहा है।

सामाजिक चुनौतियाँ और भेदभाव: पूर्वोत्तर भारत के निवासियों को देश के अन्य भागों में कभी-कभी नस्लीय भेदभाव का सामना करना पड़ता है। उनकी शारीरिक विशेषताओं और भाषा के कारण उन्हें विदेशी समझ लिया जाता है। हाल में ही देहरादून में त्रिपुरा के युवक से संबंधित एक दुखद घटना घटित हुई थी, जिसने संपूर्ण राष्ट्र को सामाजिक संवेदनशीलता पर पुनर्विचार करने को प्रेरित किया।

इसी प्रकार एक अवसर पर चीन के हवाई अड्डे पर अरुणाचल प्रदेश की एक महिला को हिरासत में लिया गया क्योंकि उन्हें चीनी नागरिक समझा गया। यह घटना नस्लीय पूर्वाग्रह और सीमावर्ती संवेदनशीलता को प्रदर्शित करती है।

खेलों में उल्लेखनीय योगदान: पूर्वोत्तर भारत ने खेल के क्षेत्र में राष्ट्र को गौरवान्वित किया है। मणिपुर, असम और मिज़ोरम जैसे राज्यों से अनेक खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर चुके हैं। बॉक्सिंग, वेटलिफ्टिंग, फुटबॉल, एथलेटिक्स और हॉकी में पूर्वोत्तर के खिलाड़ियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। खेल यहाँ के युवाओं के लिए पहचान, रोजगार और आत्मविश्वास का सशक्त माध्यम बन रहे हैं।

पर्यटन की असीम संभावनाएँ: पूर्वोत्तर भारत में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं। यह क्षेत्र अपनी अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता, पर्वत

श्रृंखलाओं, मनोरम झीलों, घने वनों, प्रवाहमान नदियों और समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के कारण पर्यटकों के लिए अत्यंत आकर्षक गंतव्य है।

असम में काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, जो एक सींग वाले गैंडों का प्राकृतिक आवास है। **मेघालय** में शिलांग, चेरापूंजी और एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव मावलिननोंग अपनी असाधारण हरियाली और अत्यधिक वर्षा के लिए विश्वभर में जाने जाते हैं। **सिक्किम** में गंगटोक, नाथुला दर्रा और कंचनजंघा पर्वत श्रृंखला पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

अरुणाचल प्रदेश में तवांग मठ और ज़ीरो घाटी अपनी आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। **मणिपुर** में लोकटक झील और केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, जो विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है, पर्यटन के प्रमुख केंद्र हैं। **नागालैंड** का विख्यात हॉर्नबिल महोत्सव और **मिज़ोरम** की अनूठी सांस्कृतिक परंपराएँ देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। **त्रिपुरा** में उज्जयंत महल, नीरमहल और माता त्रिपुरेश्वरी मंदिर जैसे ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल पर्यटन को प्रोत्साहन देते हैं।

उपसंहार

समग्रतः पूर्वोत्तर भारत वर्तमान में परिवर्तन के महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। यहाँ विकास के नवीन अवसर, बेहतर संपर्क साधन, शिक्षा का प्रसार और खेलों में उपलब्धियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। साथ ही सीमा विवाद, संसाधनों की कमी, सामाजिक तनाव और नस्लीय भेदभाव जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इन समस्याओं का समाधान संवाद, परस्पर समझ, संवेदनशील नीतियों और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से ही संभव है। पूर्वोत्तर भारत को केवल समस्याग्रस्त क्षेत्र के रूप में नहीं, अपितु अपार संभावनाओं और शक्ति के क्षेत्र

के रूप में देखा जाना चाहिए। यदि विकास योजनाओं को स्थानीय आवश्यकताओं और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप क्रियान्वित किया जाए, तो यह क्षेत्र भविष्य में भारत की प्रगति में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जंपुई हिल, त्रिपुरा

ऋण माफी: चुनावी वादों और ज़मीनी हकीकतों के बीच का फासला

संजित कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नीला आकाश खेतों पर फैला था। लहलहाती फसलें, चिड़ियों की कुहकुहाहट, धान की बालियाँ काटते किसानों के हाथ और साँप-सी बल खाती कच्ची सड़क—इसी दृश्य के बीच एक सफ़ेद बोलेरो बसगिटिया पुल पर आकर रुकी। खिड़की का शीशा नीचे हुआ। पीछे से आती मोटरसाइकिल थमी। दो चालकों के बीच संक्षिप्त बातचीत और फिर गाड़ी एक तीखा मोड़ लेकर गाँव की ओर बढ़ गई।

पुल से गाँव साफ़ दिखता था—विंध्य की पहाड़ियों की गोद में बसा, सामने केन नदी की तेज़ बहती धारा। गाड़ी गाँव के चौराहे पर रुकी। डंडों के साथ तीन सिपाही उतर पड़े। काली कमीज़ और काली पैंट पहने व्यक्ति ने रजिस्टर के पन्ने पलटते हुए नाम पढ़े—रामदयाल सिंह, नागेश्वर गिरी, द्वारिका साह और मज़नू पासवान। पूरे गाँव में इन्हीं चार नामों पर वारंट जारी था।

दोनों साक्षियों ने अपनी आँखें एक-दूसरे से मिलाईं और पूर्व की ओर बढ़ने लगे, तीनों सिपाही भी उनके साथ हो लिए। यह गाँव का पूरबी टोला है, दलितों की बस्ती। कुछ बनिये परिवार भी यहाँ रहते हैं। काली कमीज़ वाला व्यक्ति एक दरवाजे को खटखटाता है, किसी प्रकार की आवाज़ न आने पर दूसरी बार जोर से प्रयास करता है। घर के अंदर से किसी महिला की आवाज़ आई—

"कौन?"

"बैंक से आए हैं। द्वारिका जी हैं?"

"नहीं, बाहर गए हैं।"

काली कमीज़ वाला व्यक्ति मायूस हो गया। उसे उम्मीद थी कि आज यहाँ से कुछ रिकवरी हो जाएगी। यह व्यक्ति ग्रामीण बैंक का सहायक प्रबंधक है, नाम – रवि। इसी साल अप्रैल महीने में उसे ग्रामीण बैंक में नौकरी मिली थी। कुल आठ लोगों को इस क्षेत्र में पोस्टिंग मिली थी, जिनमें छह लड़कियाँ थीं। लड़कियों को क्षेत्रीय कार्यालय या निकटवर्ती शाखाओं में ही रखा गया था। किन्तु रवि का भाग्य ऐसा कहाँ, पोस्टिंग मिली थी यूपी-एमपी बॉर्डर के निकट के तहसील की शाखा में।

शाखा का पहला महीना उसे आज भी याद है। शाखा में बैठा रहता था, काम न के बराबर था, ग्राहकों का आना कम ही था। शाखा की अवस्थिति ही इसे गाँवों के लिए अभेद्य दुर्ग सा बनाए रखती थी। न गाड़ियाँ चलती थीं, न ही एक समय के बाद लोग तहसील की ओर आना पसंद करते। डाकुओं का बोलबाला था, 4 बजे के बाद पुलिस भी उस क्षेत्र में जाने से कतराती थी। पर अगले महीने सब एकाएक बदल सा गया, मई में हुई पोस्टिंग ने उसके होश उड़ा दिए।

रिकवरी के लिए बैंक ऑफ इंडिया से क्षेत्रीय कार्यालय में श्रीवास्तव जी की पोस्टिंग हुई थी। काफी नाम था, इसके पहले मिर्जापुर क्षेत्र में थे। अधिकारी बच-बच के रहते थे, टारगेट अचीव न होने पर तू-तड़ाक से भी चूकते नहीं। एक तो इनकी पोस्टिंग, दूसरे मैनेजर के संग रिकवरी अधिकारी के तबादले ने सही कसर पूरी कर दी। रिकवरी का बोझ अब इसी के कंधों पर था। विगत दो वर्षों

में ऋण वसूली के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इससे पहले केवल कागज़ों में ही ऋण जमा और ऋण निकासी का खेल चल रहा था। इससे पहले केवल एक बार ही कोई बैंक का अधिकारी आया था। पश्चिम टोले के राजकुमार के यहाँ बैठक हुई थी। राजकुमार रसूखदार व्यक्ति था, बैंक के किसी कार्य के लिए उससे ही संपर्क करना पड़ता था, अधिकारी भी उससे संपर्क बना कर रखते थे। वहीं पर ऋणियों को बुलाया गया था। कहा गया था कि पलटी हो रही है, पैसे भी मिलेंगे। कागज़ों पर उँगलियाँ लगीं, कागजों में ही ऋण राशि पचास से पचानवे हुई और हाथ में पाँच सौ के नोट। सब कितनी आसानी से हो गया।

उसका ध्यान टूटा। भूत की गलियों से थपेड़े खाते हुए वह वर्तमान में मौजूद था। उसने "मिश्रा जी" कहकर दूसरे व्यक्ति को सम्बोधित किया। उन्होंने हकलाते हुए कहा, "पासवान जी के यहाँ देख लेते हैं।"

शुरुआती दिनों में मिश्रा जी ने रवि का काफी साथ दिया था। उनके बिना यह गाँवों की पंच परिक्रमा संभव न थी। उसे अपने निर्णय पर अफ़सोस हो रहा था। शायद दूसरे गाँव हो आते, पर उसे सूचना मिली थी कि साह जी के पास कुछ पैसे आए हैं। उसे विश्वास था कि पुलिस के डर से पैसे मिल जाएंगे। 2.5 लाख की रिकवरी हो जाती और इस महीने का टारगेट भी पूरा हो जाता। सूर्य की रोशनी अब चेहरे पर सीधे पड़ रही थी। पश्चिम की ओर जाना मतलब वहाँ से ही शाखा की ओर लौट जाना। वैसे भी वह वहाँ कई बार आ चुका था। हर बार एक ही बात सुनने को मिलती—"बाबूजी, दूसरे बैंक वाले तो 10% पर कर देते हैं, आप मूलधन माँग रहे हो।" दूसरी ओर वह क्षेत्र उच्च जातियों का घर था, और पुलिस को वहाँ ले जाना यानी "जल में रहकर मगर से बैर।" अब उसने अपने कदम तेजी से मज़नू के घर की ओर बढ़ा लिए।

मज़नू का घर एक किलोमीटर आगे था। बाइक से जाना संभव नहीं था। सब पैदल चल पड़े। धूल से भरी कच्ची सड़क, बरसात से बने गड्ढे और चारों तरफ़ खेलते अर्धनग्न कुपोषित बच्चे—सब मिलकर अपने क्षेत्र में इन विशेष अतिथियों का स्वागत कर रहे थे।

रवि घर के सामने पहुँच चुका था। मज़नू, कमर में लंगोट बांधे, अपनी खाट पर सो रहा था। जैसे ही उसने रवि के साथ आते पुलिसकर्मियों को देखा, उसके चेहरे की हवाइयाँ उड़ गईं। कुछ दिन पहले ही उसे नोटिस मिला था जिसमें लिखा था:

"आपने आर्यावर्त बैंक, शाखा- नरैनी से 95,000 का ऋण लिया था जिसका बकाया राशि 1,73,009 + अद्यतन ब्याज के साथ देना है। आपके खिलाफ वारंट जारी किया जा चुका है। आपके मामले पर विचार करने पर पाया गया कि दोनों पक्षकार के बीच सुलह की संभावना है। अतः समझौते हेतु अग्रिम राशि के साथ शाखा में ज़रूर प्रस्तुत हों।"

2008 का समय था, सभी बड़े अखबारों में छपा था—किसानों को सरकार की तरफ से बड़ा तोहफा, 60,000 करोड़ का कृषि ऋण माफ। आगामी चुनाव के लिए, बैंकों पर अधिकाधिक ऋण स्वीकृति के लिए काफी दबाव था। गाँव में बताया जा रहा, "जिसको ऋण लेना है, ले लो, नई सरकार आएगी और फिर से ऋण माफी करेगी।" इसी समय मज़नू ने भी ऋण लिया था।

उसका जन्म इसी पूरबी टोले में हुआ था। कच्ची ज़मीन, फूस की छत और हर साल बरसात में टपकती उम्मीदें—यही उसका संसार था। मज़नू ने होश सँभालते ही काम सीख लिया—कभी ईंट ढोना, कभी जानवर चराना, कभी किसी के खेत में दिनभर काम करना। पढ़ाई उसके हिस्से में ज्यादा नहीं आई। पाँचवीं के बाद स्कूल छूट गया। किताबों से ज़्यादा उसे पेट की फ़िक्र थी। पिता की मौत ने घर

को जैसे बिना छत का कर दिया, और मज़नू पर जिम्मेदारी आ गई—बिना पूछे, बिना तैयारी के। शादी जल्दी हो गई। गाँव में यही रिवाज़ था। पत्नी आई तो घर में एक साँस और जुड़ी, पर रोज़ी वहीं की वहीं रही। साल-दो साल में बच्चे भी आ गए। मज़नू की दुनिया अब और सिकुड़ गई—चार दीवारों और रोज़ के इंतज़ामों के बीच।

2008 में पहली बार बैंक का नाम उसने ठीक से सुना। राजकुमार ने समझाया था—"ये कर्ज़ नहीं है, योजना है। दस्तख़त कर दो, पैसा मिल जाएगा।" मज़नू को कागज़ पढ़ना नहीं आता था। उँगली से स्याही लगाई, बस। हाथ में जब पाँच सौ के नोट आए, तो उसे पहली बार लगा कि शायद किस्मत ने करवट ली है। उसने एक गाय खरीदी। कुछ पैसे घर में लगाए। बाकी रोज़मर्रा में खर्च हो गए—जैसे पानी रेत में समा जाता है। फिर सूखा पड़ा। गाय बीमार हुई। एक बच्चा बुख़ार में चला गया। कर्ज़ वहीं का वहीं रहा, पर ज़िंदगी घटती चली गई। बैंक से कोई नहीं आया। नोटिस नहीं, पूछताछ नहीं। गाँव में कहा गया—चुनाव आएँगे, कर्ज़ माफ़ होगा। मज़नू ने भी मान लिया। मानने के सिवा उसके पास था भी क्या? साल बीतते गए, ब्याज चुपचाप बढ़ता रहा।

अब जब रवि सामने खड़ा था, तो मज़नू को अपना पूरा अतीत एक साथ दिख गया। उसने रवि की ओर देखा। डर के साथ अपराधबोध भी था । रवि ने मज़नू को बहुत देर तक नहीं देखा। अनुभव ने उसे सिखा दिया था कि ज़्यादा देर तक देखने से या तो गुस्सा आता है या दया—और दोनों ही वसूली के रास्ते में बाधा बनते हैं। उसने वारंट हाथ में लिया, फिर जेब में रख लिया।

"थाने ले जाने का हुक्म है," उसने सामान्य स्वर में कहा।

मज़नू ने कहा— "बाबूजी मेरे पास पैसे नहीं हैं, थोड़ा समय दे दो थोड़ा-थोड़ा करके ऋण चुका दूँगा, आप तो जानते हो राजकुमार भैया ने कहा था ऋण माफी

हो जाएगी, उस समय भी आधे ही पैसे हाथ में आए थे बाकी तो कागजों में ही रह गए, बैंक से भी इसके पहले कोई नोटिस नहीं आया। अब इतनी जल्दी इतने पैसे कहाँ से दूँ?"

रवि के पास इसका कोई जवाब नहीं था। किंतु मिश्रा जी ने उसकी बात को काटते हुए कहा— "मज़नू, कम से कम आधे पैसे ही जमा कर दो, नहीं तो जेल जाना पड़ेगा, परेशानी होगी।" वहाँ पर उपस्थित सभी लोग जानते थे कि आधे पैसे तो दूर, इससे 10 हजार का जुगाड़ भी न हो पाएगा, फिर भी पूछने में हरज ही क्या है।

इस बार मज़नू चुप रहा। एक सिपाही ने मज़नू की बाँह पकड़ी और उसे खड़ा कर दिया। मज़नू भी चुपचाप बोलेरो की ओर चल पड़ा। उसकी चुप्पी में विरोध नहीं, बस एक गहरी थकान थी।

अन्य दो सिपाही किनारे खड़े थे। उन्हें न कहानी से मतलब था, न कर्ज़ से। रवि ने आसपास नज़र दौड़ाई। टूटी दीवार, फटी चारपाई, कोने में बैठी उसकी पत्नी, जिसकी आँखों में अनकहे सवालों की गूँज थी, फिर भी यमदूत सदृश पुलिस के सामने अपनी अपनी अंतर्मन की व्यथा व्यक्त करने का साहस न जुटा पाई । उसे अचानक लगा कि यह सिर्फ़ मज़नू की वसूली नहीं है। यह उस पूरी व्यवस्था की वसूली है, जो हमेशा नीचे से शुरू होती है। परंतु उसे बैंक की ट्रेनिंग में केवल एनपीए (NPA), रिकवरी, टारगेट और परफॉर्मेंस जैसे शब्दों का अर्थ समझाया गया था । कहीं यह नहीं बताया गया था कि जब सामने खड़ा आदमी कागज़ों से ज़्यादा अपनी ज़िंदगी लेकर आता है, तब क्या किया जाए।

गाड़ी थाने की दिशा में बढ़ गई, और चारों ओर की धूल धीरे-धीरे जमीन पर बैठने लगी, लेकिन रवि के मन में उठा गुबार अभी शांत नहीं हुआ था। उसने मुड़कर उस फूस की झोपड़ी की ओर देखा, जहाँ अब सन्नाटा पसरा था। केन

नदी की धारा अभी भी वैसी ही तेज़ थी। उसने सोचा, व्यवस्था भी इस नदी की तरह है; वह सिर्फ किनारों को काटती है, गहराई में छिपे पत्थरों को नहीं। आज एक और 'टारगेट' पूरा हो गया था, एक और मज़नू थाने की कोठरी में था, एक और 'ऋण माफी' का वादा किसी नए चुनाव का इंतज़ार कर रहा था।

रवि ने कलम उठाई और डायरी के आखिरी पन्ने पर एक छोटी सी लकीर खींची—यह उस व्यवस्था की हार थी, जिसकी जीत का जश्न आज शाम बैंक की मीटिंग में मनाया जाना था।

उज्जयंता महल - त्रिपुरा

रावण से काम चला लूँगा

संजीव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

हे राम ना बसना मुझमे तुम,
मैं रावण से काम चला लूँगा।

तुम वचन निभाने आओगे,
यहाँ बेवजह जान गंवाओगे।

इस युग में सीता कहाँ मिलेगी?
मुश्किल है यहाँ सफर कटेगी,
अग्नि परीक्षा को सब ढोंग कहेंगे।

तुम सोचोगे .....
यहाँ कोई हनुमान मिलेगा,
सीना चीर कर प्यार मिलेगा,
या सुग्रीव की सेना आएगी,
किसी सागर पर पुल बनाएगी,

तो, हे राम – ये जान लो अब,
लोग भजन रावण की गाते हैं,
मै कैसे शीश कटवा लूँगा...?

मर्यादा का ना भार उठेगा,
मै हार को गले लगा लूँगा।
टैक्स भर के कर्ज चुका दूंगा ...
यहाँ हवनकुंड है रावण का,
सैकड़ों राम कुर्बान हुए,
जो चले थे लंका को जलाने,
आधे राह पर बेजुबान हुए,

उस युग का राम रघुवंशी था,
इस युग का राम कंकाल हुआ,
ई°एम°आई भरके, बहुत बुरा हाल हुआ,

वह सतयुग था कि राम जीत गया,
इस कलयुग का राम भयभीत हुआ....

हे राम ना बसना मुझमे तुम,
मै रावण से काम चला लूँगा । ।

मिट्टी भर

संजीव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

हम एक थे,

जज़्बात एक थे,

बात एक थी,

राह एक थी,

फिर लकीर खींची ....

तुम उस पार,

हम इस पार,

तुम मजबूर हो,

हम अकेले,

समय ढलता है,

झुर्रियां पड़ती हैं,

तुम भी मिट्टी,

मै भी मिट्टी,

और ये खींची हुई लकीर भी
मिट्टी.....

ये अंत एक है..... ।
और हम एक हैं..... ।।

जाने दो वहाँ

संदीप विश्वकर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अब मुझे न पहुंचना हैं वहाँ,
जहाँ से गिर के मैं संभल न सकूं।

छोड़ दो मुझे जाने दो वहाँ,
जहाँ अपने रास्ते पे मैं खुद चल सकूं।

क्या होगा अगर मैं बहुत दूर ही निकल गया,
अकेला रहूंगा जो मैं उस रास्ते पे चल पड़ूं।

ढूंढ लूंगा मैं उस जहान को,
जहाँ हर कदम मैं अपने साथ चल सकूं।

मंजिल को किसने है देखा,
जहाँ खुदा हैं मैं वहाँ रह सकूं।

कोई ऐसा जहान है कहाँ,
जहाँ खुद को देख, मैं खुद को बदल सकूं।

कोई कुछ नहीं हैं इस जहान में,
सफर भी मैं और मंजिल भी मैं हूं।

कोई क्या कहेगा कोई फ़र्क नहीं पड़ता,
जिंदा हूं मैं और जीता भी मैं हूं।

छोड़ दो मुझे जाने दो वहाँ,
जहाँ अपने रास्ते पे मैं खुद चल सकूं।

अब मुझे न पहुंचना हैं वहाँ,
जहाँ से गिर के मैं संभल न सकूं.

छत के कपड़े

संदीप विश्वकर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

छत पे कपड़े टंगे थे,
सूखने के लिए पड़े थे।
बसंत के समय में,
छत को धूप, हवा घेरे थे।
तभी बुढ़िया छत पे आयी,
हाथों से कपड़ों को सहलायी।
उसके हाव भाव कुछ ऐसे थे,
कपड़े जैसे सूखे न थे।
इतने में एक बूढ़ा छत पे आया,
उसने बुढ़िया से कुछ फरमाया।
फिर दोनों चल पड़े,
छत से नीचे उतर पड़े।
घर में केवल दोनों थे,
बच्चे कही दूर गए थे।
वो मां बाप के साथ न रहते,
कही दूसरे शहर में कमाते।
वो दोनों काफी सहमे सहमे से रहते,
बच्चे बुलाने पर भी नहीं आते।
शायद उनकी पत्नि नहीं चाहती,
पति के मां बाप को बोझ मानती।

शायद उन पर खर्च नहीं चाहती,
बुलाने पर भी नहीं जाती।
पर अपने मां बाप से खूब बातियाती,
और कभी कभी मिलने भी जाती।
खर्च भी ठीक ठाक कर आती,
पर बूढ़ा बुढ़िया को बोझ ही पाती।
एक दिन बूढ़ा बीमार हो गया,
कुछ दिनों बाद मर भी गया।
उसकी अंतिम इच्छा,
अपने बच्चों से मिलने की थी।
लेकिन ऐसा हो न पाया,
मोहल्ले वाले उसे गंगा में बहा आये।
जहां तक जानता था,
उसे जलाना चाहिए था।
बुढ़िया अब अकेले रह गई,
किसी ने उसे आश्रम में छोड़ दिया।
अब वो हंसती थी,
खुश भी रहती थी।
लोगों से बात भी करती थी,
छत पे कपड़े भी सुखाया करती थी।
(आज कल हमारे समाज की,
अब यही कहानी हैं।)

धुंधली सुबह और झील के किनारे रोमांच: महाबलेश्वर की एक यादगार यात्रा

शुभांशु कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब शहर की भीड़भाड़ और रोज़ाना की भागदौड़ मन को थकाने लगे, तो प्रकृति की गोद से बेहतर कोई मरहम नहीं होता। पिछले साल अगस्त की शुरुआत में, जब मानसून महाराष्ट्र पर अपनी मेहरबानी बरसा रहा था, मैंने महाबलेश्वर जाने का फैसला किया। महाराष्ट्र के सतारा जिले में स्थित यह हिल स्टेशन न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह कोयना वन्यजीव अभयारण्य (Koyna Wildlife Sanctuary) का एक अभिन्न हिस्सा भी है।

इस लेख में मैं आपको ले चलूँगा अपनी उसी धुंध भरी सुबह और झील के किनारे बिताए उन यादगार पलों की सैर पर।

1. मानसून में महाबलेश्वर: बादलों के बीच एक दुनिया

अगस्त का महीना महाबलेश्वर के लिए जादू जैसा होता है। यहाँ की हवा में एक खास किस्म की ताजगी और ठंडक होती है। जब हम वहां पहुँचे, तो पूरा परिदृश्य सफेद धुंध की चादर में लिपटा हुआ था।

- क्या आप जानते हैं? > महाबलेश्वर को 'महाराष्ट्र का स्वर्ग' कहा जाता है और यह समुद्र तल से लगभग 1,353 मीटर (4,439 फीट) की ऊंचाई पर स्थित है। मानसून के दौरान यहाँ की औसत वर्षा इसे भारत के सबसे गीले स्थानों में से एक बना देती है।

2. वेन्ना झील: शांति और सुकून का संगम

मेरी इस यात्रा का सबसे मुख्य आकर्षण थी यहाँ की प्रसिद्ध वेन्ना झील (Venna Lake)। इस झील का निर्माण 1842 में सतारा के राजा अप्पासाहेब महाराज ने करवाया था। यह झील लगभग 28 एकड़ में फैली हुई है और चारों तरफ से हरे-भरे पहाड़ों से घिरी हुई है।

झील का नजारा देखते ही बनता था। पानी की शांत लहरें और दूर कहीं धुंध में खोती नावें—ऐसा लग रहा था जैसे किसी कलाकार ने कैनवस पर पेंटिंग उकेरी हो। झील के किनारे लगे स्वागत बोर्ड यात्रियों का उत्साह बढ़ाते हैं, जो फोटो खिंचवाने के लिए एक बेहतरीन जगह है।

3. नौका विहार (Boating): लहरों के साथ एक सफर

वेन्ना झील आए और बोटिंग न की, तो यात्रा अधूरी है। हमने सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते हुए लाइफ जैकेट पहनी और अपनी नाव पर सवार हो गए। पानी की हल्की थपथपाहट और ठंडी हवाओं के बीच वह अनुभव बेहद सुकून देने वाला था।

* रोमांच और सुरक्षा: लाइफ जैकेट पहनकर जब हम गहरे पानी में उतरे, तो एक अलग ही रोमांच का अहसास हुआ।
* प्रकृति का खेल: बोटिंग के दौरान कभी बादलों के बीच से सूरज की किरणें पानी को चमका देती थीं, तो कभी अचानक कोहरा हमें चारों तरफ से घेर लेता था। यह प्रकृति का लुका-छिपी का खेल वाकई देखने लायक था।

4. केवल झील ही नहीं, और भी बहुत कुछ!

महाबलेश्वर अपनी स्ट्रॉबेरी के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। भारत की कुल स्ट्रॉबेरी पैदावार का लगभग 80-85% हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है। भले ही अगस्त स्ट्रॉबेरी का सीजन (जो आमतौर पर दिसंबर से मार्च होता है) नहीं था,

लेकिन यहाँ के खेतों की हरियाली और स्थानीय दुकानों पर मिलने वाले स्ट्रॉबेरी शेक और जैम का स्वाद आज भी मेरी जुबान पर है।

इसके अलावा, हमने लिंगमाला जलप्रपात और आर्थर सीट जैसे पॉइंट्स भी देखे। अगस्त में जलप्रपात अपने पूरे शबाब पर होते हैं और उनकी गर्जना दूर-दूर तक सुनाई देती है।

5. कोयना वन्यजीव अभयारण्य: जैव विविधता का खजाना

महाबलेश्वर का एक बड़ा हिस्सा कोयना वन्यजीव अभयारण्य के अंतर्गत आता है, जो एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (UNESCO World Heritage Site) है। यह इलाका भारतीय बाइसन (गौर), तेंदुए और कई दुर्लभ पक्षियों का घर है। यहाँ की घनी झाड़ियाँ और ऊँचे पेड़ मानसून में और भी गहरे हरे हो जाते हैं।

यात्रा के कुछ खास टिप्स (Travel Tips):

* पहनावा: अगस्त में यहाँ काफी बारिश होती है, इसलिए रेनकोट और वाटरप्रूफ जूते साथ रखना न भूलें। हल्की ठंड के लिए स्वेटर भी जरूरी है।
* फोटोग्राफी: वेन्ना झील की जेटी (Jetty) पर खड़े होकर नावों के साथ फोटो जरूर लें, यह एक बेहतरीन बैकग्राउंड देता है।
* समय: बोटिंग के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा रहता है जब भीड़ कम और धुंध ज्यादा होती है।

निष्कर्ष

महाबलेश्वर की यह यात्रा केवल एक ट्रिप नहीं थी, बल्कि खुद को प्रकृति से दोबारा जोड़ने का एक जरिया थी। धुंधली सुबह, शांत झील और अपनों का साथ—इन यादों को मैं हमेशा संजोकर रखूँगा। अगर आप भी शांति और रोमांच की तलाश में हैं, तो महाबलेश्वर आपका इंतजार कर रहा है।

लाचार पिता

सुमित कुमार,
वरिष्ठ अनुवादक

प्रत्येक दिन के तरह आज भी श्री रघुवीर प्रसाद प्रातः भ्रमण करने के बाद अपने घर में प्रवेश करते ही क्रोध से आग बबूला हो गए। सुबह के सात बज गए थे परंतु उनके दोनों बेटे रजनी और करण अभी तक बिस्तर से नहीं उठे थे। माता-पिता ने उन्हें बहुत प्यार से पाला और हर सुख-सुविधा देने की कोशिश की परंतु, इन लाड़-प्यार ने उनको बिगाड़ कर रख दिया था। वे सोचते कि अभी बच्चे है, जब बड़े हो जाएंगे तो दुनियादारी समझ जाएंगे। रघुवीर प्रसाद का दिन प्रायः ऐसे ही शुरू होता है। प्रत्येक दिन सुबह वो अपने बेटों को अनुशासन एवं ज़िम्मेदारी का पाठ पढ़ाया करते थे एवं अपने बेटों को जीवन में सफल होने का मंत्र दिया करते। उनके दोनों बेटे अपने पिताजी के बातों पर शायद ही ध्यान देते एवं कॉलेज जाने के बहाने सारा दिन अपने कॉलेज दोस्तो के साथ मस्ती करते। रघुवीर प्रसाद अक्सर उन्हे अपने बचपन के संघर्ष के दिनों की बातें बताया करते कि कैसे उन्होने अपने पिताजी को बचपन में खो देने के बाद भी अपने मेहनत के बल पर एक प्रतिष्ठित सरकारी पद को प्राप्त किया था।

रघुवीर प्रसाद के ईमानदार एवं मित्रवत चरित्र के कारण दफ्तर में उनकी बहुत इज्जत था। वे अपने दफ्तर में सबसे ईमानदार और मेहनती अधिकारी के रूप में जाने जाते थे। उनके सभी सहकर्मी उनका बहुत सम्मान किया करते थे। रघुवीर प्रसाद ने लगभग 35 साल तक एक सरकारी अधिकारी के रूप में काम

किया। हर सुबह वे समय पर दफ्तर जाते, पूरे लगन से काम करते और यह सोचकर घर लौटते कि वे अपने परिवार का भविष्य सुरक्षित बना रहे हैं।

रघुवीर प्रसाद की पत्नी सविता हमेशा उनके साथ खड़ी रहीं। उन्होंने भी अपने जीवन में कई त्याग किए, ताकि बच्चों की पढ़ाई और घर की जिम्मेदारियां अच्छी तरह पूरी हो सकें। रघुवीर प्रसाद और सविता का सपना था कि उनके बेटें अपने जिम्मेदारियों को उठा लें ताकि रिटायरमेंट के बाद वे शांति से साथ समय बिताएंगे। परंतु, उनके दोनों बेटें ही नालायक निकले। थक हार कर रघुवीर प्रसाद ने अपने बड़े बेटे रजनी की शादी करवा दी। उनको विचार आया कि शादी के बाद शायद वह अपने जिम्मेदारियों को समझने लगेगा। हालाँकि, शादी के बाद रजनी ने एक प्राइवेट कंपनी में काम करना शुरू किया परंतु, काम करने में उसका मन नहीं लगता था। उसको तो आराम एवं मस्ती करने का शौक था, जो शायद ही छूटता है।

आखिरकार कुछ वर्षों के बाद रघुवीर प्रसाद की रिटायरमेंट का दिन आ गया। दफ्तर में उनके लिए विदाई समारोह हुआ और उन्हें रिटायरमेंट के समय अच्छी-खासी रकम मिली—उनकी जमा पूंजी, प्रोविडेंट फंड और अन्य लाभ। रघुवीर प्रसाद ने सोचा कि इन पैसों से वह एवं सविता अपने आगे के जीवन को आराम से बीता सकेंगे। सविता की कई वर्षों से असीम इच्छा थी, कि वो अपने पति के साथ तीर्थयात्रा पर जाए। उसका यह सपना अब सच होता दिख रहा था।

शुरुआत में सब ठीक था, लेकिन धीरे-धीरे हालात बदलने लगे।

दोनों बेटों ने अलग-अलग कारण बताकर पैसे मांगने शुरू कर दिए। रजनी ने अपने पिताजी से कहा कि वह अपना व्यापार शुरू करना चाहता है। उसका

मानना था, कि अपना काम करने से उसे ज्यादा काम नहीं करना पड़ेगा एवं दूसरे के अंदर काम नहीं करना पड़ेगा। और करण ने कहा कि उसे निवेश करना है। रघुवीर प्रसाद ने अपने बेटों पर भरोसा करते हुए अपनी लगभग सारी जमा पूंजी उन्हें दे दी। सविता ने समझाया भी कि थोड़ा पैसा अपने पास रख लेना चाहिए, लेकिन रघुवीर प्रसाद अपने बेटों के प्यार के आगे लाचार हो गए थे। बेटों ने हठ ही ऐसी कर रखी थी कि रघुवीर प्रसाद को उनके आगे झुकना पड़ा। उन्होने सारे रकम को अपने दोनों बेटों में बाँट दिया। उन्होने सोचा कि हमारा गुजारा तो पेंशन के पैसो से हो ही जाएगा।

कुछ ही वर्षों में सारी रकम खत्म हो गई। व्यापार भी सफल नहीं हुआ और निवेश भी डूब गया।

इसके बाद घर का माहौल पूरी तरह बदल गया। बेटों ने अपने माता-पिता से दूरी बनानी शुरू कर दी। वे पहले की तरह आदर और प्रेम से बात नहीं करते थे। रघुवीर प्रसाद, जो कभी एक सम्मानित अधिकारी थे, अब घर में उपेक्षित महसूस करने लगे। सविता ही उनका सहारा थीं, जो उनका ख्याल रखती थीं। रघुवीर प्रसाद को मिलने वाले पेंशन से मुश्किल से गुजारा हो रहा था। उनके दोनों बेटों के पास अब कोई भी काम नहीं था। अब घर का खर्चा भी उनके पेंशन से ही चल पा रहा था। रघुवीर प्रसाद उनके भविष्य को लेकर काफी चिंतित रहने लगे। वें अपने आप को उनका परवरिश सही नहीं करने का दोषी मानते। इस कारण उनका स्वस्थ दिनचर्या भी प्रभावित होने लगी।

धीरे-धीरे रघुवीर प्रसाद की तबीयत खराब रहने लगी। चिकित्सकों ने उन्हे सही खान-पान एवं तनाव नहीं लेने की सलाह दी, परंतु, बेटों का नालायक होना उनको हर वक्त सताता रहता था। वे अब उनको समझा भी नहीं पाते थे, क्यूंकि

उनके बेटें अब उनसे बात भी नहीं करते थे। एक ठंडी शाम को उनकी हालत अचानक बहुत बिगड़ गई। सविता घबरा गईं, लेकिन पैसो के अभाव में समय पर सही इलाज नहीं मिल सका। कुछ ही देर में रघुवीर प्रसाद ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया।

रघुवीर प्रसाद के जाने के बाद सविता बिल्कुल अकेली पड़ गईं।

शुरुआत में कुछ दिनों तक बेटों ने औपचारिक रूप से उनका ध्यान रखा, लेकिन धीरे-धीरे वे उन्हें बोझ समझने लगे। घर में अक्सर यह बात होने लगी कि अब मां की देखभाल करना मुश्किल है।

एक दिन बेटों ने फैसला किया कि सविता को वृद्धाश्रम भेज दिया जाए।

जब सविता को यह बात बताई गई, तो उनका दिल टूट गया। जिस घर को उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी से संवारकर बनाया था, उसी घर से उन्हें दूर भेजा जा रहा था। आंखों में आंसू लिए वे चुपचाप बेटों के साथ वृद्धाश्रम चली गईं।

वृद्धाश्रम में उनका जीवन बहुत कठिन हो गया। वहां कई बुजुर्ग थे, जिनकी कहानी लगभग एक जैसी थी—सब अपने ही बच्चों द्वारा छोड़े गए थे। सविता अक्सर एक कोने में बैठकर अपने पति रघुवीर प्रसाद को याद करती थीं। उन्हें उनके साथ बिताए दिन, उनकी बातें और उनका संघर्ष याद आता था। वह हमेशा सोचती, काश वो मेरी बात मानकर अपने बेटों को सारा रकम नहीं देते तो आज मुझे यह दिन नहीं देखना पड़ता।

वहां उन्हें खाना और रहने की जगह तो मिल जाती थी, लेकिन अपनापन नहीं मिलता था। कई रातें वे रोते-रोते बितातीं। उन्हें यह सोचकर सबसे ज्यादा दुख

होता था कि जिन बच्चों के लिए उन्होंने अपना सब कुछ त्याग दिया, वही आज उन्हें भूल गए।

समय के साथ सविता बहुत कमजोर और असहाय हो गईं। उनका मन हमेशा उदास रहने लगा। वे अक्सर खिड़की के पास बैठकर आसमान की ओर देखतीं और मन ही मन अपने पति से बात करतीं।

एक दिन उनकी तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गई। वृद्धाश्रम के कर्मचारियों ने उनकी देखभाल करने की कोशिश की, लेकिन उनका मन पहले ही टूट चुका था। कई दिनों से वे ठीक से खा भी नहीं पा रही थीं।

आखिरकार एक शांत रात में, आंखों में आंसू और दिल में अपार दुख लिए, सविता ने भी इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उनके अंतिम समय में उनके बेटे उनके पास नहीं थे। उनके पास सिर्फ यादें थीं—अपने पति की, अपने घर की, और उस परिवार की जिसके लिए उन्होंने पूरी जिंदगी समर्पित कर दी।

कुछ समय बाद जब बेटों को यह खबर मिली, तो उन्हें गहरा पछतावा हुआ। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

सहानुभूति के बिना बुद्धि दमनकारी हो जाती है

सौरभ राज,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मनुष्य को अन्य जीवों से भिन्न बनाने वाले अनेक गुणों में दो गुण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं – उसकी बुद्धि और उसकी सहानुभूति। बुद्धि वह शक्ति है जो मनुष्य को जटिल समस्याओं को हल करने, नए आविष्कार करने और प्रकृति को नियंत्रित करने की क्षमता देती है। वहीं सहानुभूति वह मानवीय संवेदना है, जो उसे दूसरों के दुख को समझने और उसका समाधान खोजने की प्रेरणा देती है। जब ये दोनों शक्तियाँ साथ होती हैं, तब मनुष्य विकास और करुणा के साथ एक समृद्ध सभ्यता का निर्माण करता है। लेकिन जब बुद्धि अकेली पड़ जाती है और सहानुभूति का साथ नहीं होता, तो वही बुद्धि दमनकारी, विनाशकारी और अमानवीय बन जाती है।

यह द्वंद्व मानव सभ्यता के इतिहास में बार-बार सामने आया है। अनेक बार हमने देखा है कि एक वैज्ञानिक आविष्कार, एक तकनीकी खोज या एक प्रशासनिक निर्णय जो बुद्धि की दृष्टि से तो अद्भुत था, लेकिन उसमें सहानुभूति की अनुपस्थिति ने उसे क्रूर बना दिया।

आधुनिक विज्ञान और तकनीक ने अविश्वसनीय प्रगति की है। इंसान चाँद पर पहुँचा है, जीन एडिटिंग कर रहा है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) विकसित कर रहा है, और बिग डेटा के माध्यम से समाज को समझने की कोशिश कर रहा है। परन्तु यही तकनीक तब भयावह हो जाती है जब उसके पीछे मानवीय संवेदना, नैतिकता और सहानुभूति नहीं होती । सवाल सिर्फ यह नहीं होता कि "क्या हम यह कर सकते हैं?" बल्कि यह भी होता है – "क्या हमें यह करना चाहिए?"

यदि किसी वैज्ञानिक को यह अहसास ही न हो कि उसका आविष्कार भविष्य में लाखों लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित कर सकता है, तो वह आविष्कार एक हथियार बन सकता है। इसी तरह यदि कोई प्रशासक या नीति निर्माता केवल आँकड़ों को देखकर निर्णय ले, पर ज़मीन पर जनता की पीड़ा न समझे, तो उसका निर्णय अन्यायपूर्ण साबित होता है।

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में विज्ञान ने अद्भुत ऊँचाइयाँ छुईं। इंसान ने प्रकृति की गहराइयों में उतरकर परमाणु ऊर्जा के रहस्य खोले। यह खोज मानव इतिहास का एक महान बौद्धिक मील का पत्थर थी। परंतु जब इसी ज्ञान का प्रयोग युद्ध में व्यापक विनाश के लिए हुआ, तो यह सिद्ध हो गया कि सिर्फ बुद्धि, बिना सहानुभूति, विनाश का कारण बन सकती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका, इंग्लैंड और कनाडा ने मिलकर "मैनहैटन प्रोजेक्ट" नामक एक गुप्त परियोजना शुरू की। इसका उद्देश्य था—परमाणु बम बनाना, इससे पहले कि नाज़ी जर्मनी इसे बना ले। इस परियोजना में रॉबर्ट ओपेनहाइमर, एनरिको फर्मी, रिचर्ड फाइनमैन जैसे विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक शामिल थे।

यह परियोजना वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत सफल रही। 16 जुलाई 1945 को न्यू मैक्सिको के रेगिस्तान में पहला परमाणु परीक्षण (कोड नाम “Trinity”) हुआ। इससे पहले इतनी ऊर्जा मनुष्य ने कभी नहीं उत्सर्जित की थी।

परमाणु बम बनाना बुद्धिमत्ता का प्रतीक हो सकता है, परंतु इसका प्रयोग नैतिकता की परीक्षा बन गया। अमेरिका ने अगस्त 1945 में जापान के दो शहरों — हिरोशिमा (6 अगस्त) और नागासाकी (9 अगस्त) — पर परमाणु बम गिराए। हिरोशिमा में लगभग 1.4 लाख लोग मारे गए, और नागासाकी में लगभग 80,000। लाखों लोग विकिरण बीमारियों, कैंसर, जन्मजात विकृतियों और मानसिक

आघात से ग्रस्त हुए। आज भी वहाँ पीड़ितों की तीसरी पीढ़ी इसका असर झेल रही है।

क्या होता यदि ओपेनहाइमर और उनके सहयोगी यह कल्पना करते कि उनके आविष्कार से लाखों निर्दोष नागरिक—महिलाएं, बच्चे, वृद्ध - भस्म हो जाएंगे?

- क्या वे इस प्रोजेक्ट में उसी भाव से काम करते?
- क्या अमेरिका इन बमों का प्रयोग इतना सहजता से करता यदि उसे नागरिकों की पीड़ा की कल्पना होती?

यहाँ सहानुभूति का अभाव स्पष्ट था। निर्णय सिर्फ रणनीतिक था, मानवीय नहीं। विज्ञान स्वयं नैतिक या अमानवीय नहीं होता। वह तो सिर्फ एक उपकरण है। उसकी दिशा इस बात से तय होती है कि उसके पीछे कौन-सी भावना है :-

- यदि उद्देश्य मानव कल्याण हो, तो वही परमाणु ऊर्जा बिजली घर बन सकती है।
- यदि उद्देश्य शक्ति प्रदर्शन और नियंत्रण हो, तो वही ऊर्जा परमाणु बम बन सकती है।

इसलिए बुद्धिमत्ता को दिशा देने का कार्य सहानुभूति का होता है।

हिरोशिमा और नागासाकी के बाद परमाणु हथियार समाप्त नहीं हुए, बल्कि उनकी होड़ शुरू हो गई। अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध के दौरान हजारों बम बनाए गए।

दुनिया में आज भी 13,000 से अधिक परमाणु हथियार हैं। कुछ इतने शक्तिशाली हैं कि एक बटन दबने पर पूरी सभ्यता नष्ट हो सकती है।

यह स्थिति इसलिए बनी क्योंकि विज्ञान ने तो शक्ति दी, पर मानवीय भावना—सहानुभूति—उस शक्ति को नियंत्रित नहीं कर सकी।

जब बुद्धि का उपयोग किसी विचारधारा के अंधे समर्थन में होता है, और उसमें मानवीय करुणा या सहानुभूति की कोई जगह नहीं रहती, तब विज्ञान और चिकित्सा भी अमानवता के उपकरण बन जाते हैं। नाज़ी जर्मनी इसका भयावह उदाहरण है। यहाँ विज्ञान और बुद्धि को एक भ्रामक 'शुद्धता' के विचार के पीछे खड़ा कर दिया गया और मानवता पर ऐसे अत्याचार हुए, जो इतिहास में सबसे काले अध्याय माने जाते हैं।

यूजीनिक्स (Eugenics) एक वैज्ञानिक विचार था, जिसके अनुसार मानव नस्ल को 'सुधारने' के लिए जनसंख्या में अवांछनीय समझे जाने वाले लोगों का प्रजनन रोका जाना चाहिए । यह सिद्धांत कई पश्चिमी देशों में प्रचलित था, परंतु नाज़ी जर्मनी ने इसे एक दमनकारी सामाजिक नीति में बदल दिया । हिटलर और उसके अनुयायियों ने वैज्ञानिक शोध, चिकित्सा, और मनोविज्ञान का उपयोग यह प्रमाणित करने के लिए किया कि यहूदी, स्लाव, विकलांग, समलैंगिक और मानसिक रोगियों को "हीन" माना जाए । यह “नस्लीय शुद्धता” के नाम पर किया गया सबसे क्रूर प्रयोग था । बुद्धिमत्ता का उपयोग ऐसे कार्यक्रमों को संचालित करने में किया गया जिनमें लाखों लोगों की नसबंदी कर दी गई, उन्हें शिविरों में भेज दिया गया, या उन्हें 'मर्सी किलिंग' के नाम पर मार दिया गया यदि इन वैज्ञानिकों में पीड़ितों के प्रति संवेदना होती यदि वे एक बच्चे के रोने की आवाज को मानवता की पुकार समझते, यदि उन्होंने यह महसूस किया होता कि 'प्रयोग' के नाम पर वे एक इंसान को तोड़ रहे हैं तो शायद इतिहास का यह अध्याय लिखा ही नहीं जाता। यहाँ यह स्पष्ट होता है कि बुद्धि, जब सहानुभूति से विहीन होती है, तो वह क्रूरता का उपकरण बन जाती है। 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में इंग्लैंड से शुरू हुई औद्योगिक क्रांति ने कपड़ा उद्योग, धातु उद्योग, परिवहन, और ऊर्जा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए ।

जेम्स वाट ने भाप इंजन में सुधार किया, रिचर्ड आर्कराइट ने स्पिनिंग फ्रेम बनाया, और एली व्हिटनी ने कॉटन जिन का अविष्कार किया । इन आविष्कारों ने उत्पादन को तेज किया, लागत को घटाया और उत्पादों को आम जनता तक पहुँचाया । लेकिन इनका सामाजिक और मानवीय मूल्य क्या था ? फैक्ट्रियाँ खुलने लगीं, लेकिन उनका ढांचा इस प्रकार था:

- श्रमिकों को 12 से 16 घंटे काम करना पड़ता था।
- कोई चिकित्सा सुविधा या सुरक्षा उपकरण नहीं।
- महिलाएं और बच्चे भी उन्हीं हालातों में कार्यरत थे।
- मजदूरी न्यूनतम, कार्य अधिकतम।
- श्रमिकों को मशीनों का "अटैचमेंट" मान लिया गया।

यहाँ बुद्धि ने उत्पादन की नई दुनिया रची, लेकिन सहानुभूति ने उस दुनिया से मुँह मोड़ लिया।

संपूर्ण लेख की यात्रा ने यह स्पष्ट कर दिया कि सहानुभूति के बिना बुद्धि न केवल अधूरी है, बल्कि खतरनाक भी हो सकती है । इतिहास, विज्ञान, राजनीति और प्रौद्योगिकी के विभिन्न उदाहरणों से यह प्रमाणित होता है कि जब बुद्धि को मानवीय दृष्टिकोण, संवेदना और करुणा से नहीं जोड़ा जाता, तो वह दमन का उपकरण बन जाती है।

भारतीय बेरोज़गार युवाओं में व्लॉगिंग के प्रति बढ़ता आकर्षण: कारण और प्रभाव

सायक नंदी,
लेखापरीक्षक

भूमिका: पिछले कुछ वर्षों में भारत में व्लॉगिंग केवल एक शौक नहीं, बल्कि बड़ी संख्या में युवाओं के लिए एक पेशे के रूप में उभरी है। विशेष रूप से बेरोज़गार या अर्ध-रोज़गार में लगे युवाओं के बीच व्लॉगिंग का आकर्षण अत्यधिक बढ़ा है। स्मार्टफोन, सस्ता इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की आसान उपलब्धता ने इसे और भी लोकप्रिय बना दिया है। लेकिन इस प्रवृत्ति के पीछे के कारणों और इसके समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना आवश्यक है।

व्लॉगिंग को पेशा चुनने के प्रमुख कारण: सबसे बड़ा कारण बेरोज़गारी और सीमित रोज़गार के अवसर हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद जब युवाओं को स्थायी नौकरी नहीं मिलती, तो वे वैकल्पिक रास्तों की तलाश करते हैं। व्लॉगिंग उन्हें बिना किसी बड़ी पूंजी के, घर बैठे पहचान और आय कमाने का अवसर देती है।

दूसरा कारण त्वरित प्रसिद्धि की चाह है। सोशल मीडिया पर कुछ व्लॉगर्स की अचानक मिली सफलता यह भ्रम पैदा करती है कि यह रास्ता आसान और जल्दी परिणाम देने वाला है। लाइक्स, सब्सक्राइबर्स और फॉलोअर्स युवाओं के लिए मान्यता और आत्मसम्मान का नया पैमाना बन गए हैं। तीसरा कारण कार्य की स्वतंत्रता है। न बॉस का दबाव, न निश्चित समय, और न ही औपचारिक नियम।

यह आज़ादी युवाओं को आकर्षित करती है, खासकर उन्हें जो पारंपरिक नौकरियों की कठोर संरचना से असहज महसूस करते हैं।

भारतीय समाज में देखे जाने वाले व्लॉगर्स के प्रकार: भारत में व्लॉगिंग का दायरा बहुत व्यापक हो चुका है। अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि, आयु वर्ग और रुचियों के लोग विभिन्न प्रकार की व्लॉगिंग करते नज़र आते हैं। नीचे भारत में आमतौर पर देखे जाने वाले व्लॉगर्स के प्रमुख प्रकारों का विस्तृत वर्णन दिया गया है:

1. डेली लाइफ व्लॉगर्स

ये व्लॉगर्स अपने रोज़मर्रा के जीवन, दिनचर्या, व्यक्तिगत अनुभवों और साधारण गतिविधियों को रिकॉर्ड करते हैं। विशेषत: दर्शकों के साथ सहज, आत्मीय और वास्तविक जुड़ाव। समस्या: निजी जीवन का अनावश्यक प्रदर्शन और व्यक्तिगत गोपनीयता का क्षरण।

2. फूड व्लॉगर्स

स्ट्रीट फूड से लेकर महंगे रेस्टोरेंट तक, खाने से जुड़े अनुभव दिखाते हैं। विशेषता: भारतीय खाद्य विविधता और स्थानीय स्वाद का प्रदर्शन। समस्या: स्वच्छता की अनदेखी और व्यूज़ के लिए अतिशयोक्ति।

3. ट्रैवल व्लॉगर्स

देश–विदेश की यात्राओं, स्थानीय संस्कृति, खानपान और खर्च से जुड़ी जानकारी साझा करते हैं।विशेषता: पर्यटन को बढ़ावा और नई जगहों की जानकारी। समस्या: अवास्तविक बजट, दिखावटी जीवनशैली और जोखिम भरे सफ़र का महिमामंडन।

4. फिटनेस व्लॉगर्स

वर्कआउट, योग, डाइट, बॉडी ट्रांसफॉर्मेशन और सप्लीमेंट्स पर वीडियो बनाते हैं। विशेषता: स्वास्थ्य और फिटनेस के प्रति जागरूकता। समस्या: बिना विशेषज्ञता के अवैज्ञानिक सलाह और शारीरिक नुकसान की आशंका।

5. लाइफस्टाइल व्लॉगर्स

ये व्लॉगर्स फैशन, ब्यूटी, घर की सजावट, रोज़मर्रा की शैली, खरीदारी, ब्रांडिंग और व्यक्तिगत स्टाइल से जुड़े अनुभव साझा करते हैं। विशेषता: जीवनशैली से जुड़ी नई ट्रेंड्स, प्रोडक्ट रिव्यू और प्रेरणादायक जीवनशैली के टिप्स। समस्या: दिखावा, भौतिकवाद को बढ़ावा और वास्तविकता से दूर जीवनशैली का आदर्श प्रस्तुत करना।

6. टेक व्लॉगर्स

मोबाइल, लैपटॉप, गैजेट्स, ऐप्स और तकनीकी रिव्यू प्रस्तुत करते हैं। विशेषता: उपभोक्ताओं को तकनीक से जुड़ी जानकारी और तुलना। समस्या: प्रायोजित, पक्षपाती कंटेंट और अतिरंजित दावे।

7 एजुकेशनल व्लॉगर्स

पढ़ाई, प्रतियोगी परीक्षाओं, करियर गाइडेंस और स्किल डेवलपमेंट से संबंधित वीडियो। विशेषता: उपयोगी, ज्ञानवर्धक और दिशा देने वाला कंटेंट। समस्या: अधूरी या गलत जानकारी से भ्रम और गलत निर्णय।

8. मोटिवेशनल व्लॉगर्स

सफलता, आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और जीवन दर्शन पर आधारित कंटेंट। विशेषता: युवाओं को मानसिक प्रोत्साहन और आशा। समस्या: वास्तविक अनुभव या प्रमाण के बिना सतही प्रेरणादायक बातें।

9. धार्मिक और आध्यात्मिक व्लॉगर्स

धर्म, भक्ति, प्रवचन और आध्यात्मिक विचार साझा करते हैं। विशेषता: आस्था, मानसिक शांति और नैतिक संदेश। समस्या: अंधविश्वास, भ्रामक दावे और तर्कहीन प्रचार।

10. प्रैंक और चैलेंज व्लॉगर्स

ये व्लॉगर्स मज़ाक, प्रैंक और असामान्य चुनौतियों के वीडियो बनाते हैं। विशेषता: तेज़ी से वायरल होने वाला कंटेंट। समस्या: सार्वजनिक असुविधा, अपमानजनक व्यवहार और कानून उल्लंघन की संभावना।

11. रिएक्शन व्लॉगर्स

फिल्मों, गानों, ट्रेलरों या अन्य व्लॉग्स पर अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत करते हैं। विशेषता: कम संसाधनों में कंटेंट निर्माण और त्वरित अपलोड। समस्या: मौलिकता की कमी और दूसरों के कंटेंट पर अत्यधिक निर्भरता।

12. गॉसिप और ड्रामा व्लॉगर्स

सेलेब्रिटी विवादों, सोशल मीडिया झगड़ों और अफवाहों पर केंद्रित कंटेंट। विशेषता: त्वरित व्यूज़ और चर्चा में बने रहने की क्षमता। समस्या: नकारात्मकता, ट्रोलिंग संस्कृति और गलत सूचना का प्रसार।

व्लॉगिंग की वास्तविक चुनौतियाँ: हालाँकि व्लॉगिंग बाहर से आकर्षक दिखती है, लेकिन इसमें प्रतिस्पर्धा अत्यधिक है। लाखों लोग एक ही तरह का कंटेंट बना रहे हैं, जिससे अधिकांश व्लॉगर्स को न तो पहचान मिलती है और न ही स्थायी

आय। कई युवा इसमें समय और ऊर्जा लगाने के बाद निराशा का सामना करते हैं।

इसके अलावा, निरंतर कंटेंट बनाने का दबाव मानसिक तनाव को जन्म देता है। व्यूज़ और सब्सक्राइबर्स घटने पर आत्मविश्वास में कमी और असुरक्षा की भावना बढ़ जाती है।

आम नागरिकों पर पड़ने वाला प्रभाव: व्लॉगिंग की अति का असर आम लोगों की दैनिक ज़िंदगी पर भी पड़ रहा है। सार्वजनिक स्थानों पर बिना अनुमति रिकॉर्डिंग, निजी जीवन में दखल और हर गतिविधि को कैमरे में कैद करने की प्रवृत्ति असुविधा पैदा करती है। कई बार यह गोपनीयता के उल्लंघन और सामाजिक शिष्टाचार के ह्रास का कारण बनती है।

इसके अतिरिक्त, कुछ व्लॉगर्स केवल व्यूज़ के लिए भ्रामक, अतिरंजित या गैर-जिम्मेदाराना कंटेंट प्रस्तुत करते हैं, जिससे गलत जानकारी फैलती है और सामाजिक मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष: व्लॉगिंग अपने आप में न तो गलत है और न ही अनुपयोगी। यह रचनात्मकता और अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम हो सकता है। लेकिन जब बेरोज़गारी की मजबूरी, त्वरित प्रसिद्धि का भ्रम और सामाजिक जिम्मेदारी की कमी मिल जाती है, तो यह समस्या का रूप ले लेती है। आवश्यकता है संतुलन की—जहाँ युवा व्लॉगिंग को एक विकल्प के रूप में देखें, एकमात्र समाधान के रूप में नहीं, और समाज भी डिजिटल अभिव्यक्ति के साथ-साथ मर्यादा और जिम्मेदारी को महत्व दे।

गलत होने की कीमत, कुछ न करने की कीमत से कम है

श्री हिमांशु,
उप महालेखाकार

मनुष्य के जीवन में निर्णय एक अनिवार्य तत्व है। प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र निरंतर ऐसे चौराहों पर खड़ा होता है जहाँ निर्णय लेना अपरिहार्य होता है। प्रस्तुत कथन—"गलत होने की कीमत, कुछ न करने की कीमत से कम है"—इसी निर्णय-दुविधा की गहन व्याख्या करता है। यह कथन उस निष्क्रियता को चुनौती देता है, जो भय, असमंजस या सुविधा के कारण मनुष्य को कर्म से विमुख कर देती है। यह विचार स्पष्ट करता है कि त्रुटिपूर्ण कर्म भी अकर्म से श्रेष्ठ है, क्योंकि कर्म से सीख, परिवर्तन और प्रगति की संभावना जन्म लेती है, जबकि अकर्म केवल जड़ता और पतन को जन्म देता है।

दार्शनिक परिप्रेक्ष्य: भारतीय दर्शन में कर्म को जीवन का मूल तत्व माना गया है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि अकर्म की स्थिति न तो संभव है और न ही कल्याणकारी। यहाँ तक कि निष्क्रियता भी एक प्रकार का कर्म ही है, जिसके परिणाम होते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो गलत निर्णय भी जीवन के प्रवाह में एक अनुभव है, जबकि निर्णय से पलायन स्वयं में एक गंभीर त्रुटि है। अस्तित्ववादी दर्शन भी इसी विचार की पुष्ट करता है। जाँ-पॉल सार्त्र के अनुसार, मनुष्य कर्म न करके भी चुनाव करता है—और वह चुनाव अक्सर कायरता का होता है।

स्टोइक दर्शन में कहा गया है कि मनुष्य को अपने नियंत्रण के भीतर आने वाले कर्म अवश्य करने चाहिए, चाहे परिणाम अनिश्चित ही क्यों न हों। भय से प्रेरित निष्क्रियता आत्मा को दुर्बल बनाती है। इस प्रकार, दर्शन हमें यह सिखाता है कि गलत होने का जोखिम जीवन का स्वाभाविक अंग है, परंतु कुछ न करना जीवन के अर्थ को ही खोखला कर देता है।

ऐतिहासिक दृष्टि: इतिहास में प्रगति उन्हीं समाजों और व्यक्तियों ने की है जिन्होंने जोखिम उठाया, भले ही वे प्रारंभ में गलत सिद्ध हुए हों। कोलंबस का समुद्री अभियान, वैज्ञानिक आविष्कारों में हुए असंख्य असफल प्रयोग या लोकतंत्र की स्थापना की प्रक्रिया—इन सभी में गलतियाँ हुईं, किंतु निष्क्रियता होती तो मानव इतिहास ठहर जाता।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी यह सत्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अनेक आंदोलनों की रणनीतियाँ तत्काल सफल नहीं रहीं, परंतु यदि राष्ट्र ने "कुछ न करने" का मार्ग चुना होता, तो स्वतंत्रता की कल्पना ही अधूरी रह जाती। महात्मा गांधी के कई प्रयोग आलोचना के घेरे में आए, किंतु उनका नैतिक साहस और सक्रियता ही परिवर्तन का आधार बनी।

इतिहास यह भी बताता है कि सबसे बड़ी त्रासदियाँ अक्सर निष्क्रियता से जन्म लेती हैं—जब अन्याय के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाई जाती, जब अत्याचार को मौन स्वीकृति मिल जाती है।

पौराणिक एवं मिथकीय संदर्भ: भारतीय महाकाव्यों में यह विचार अत्यंत सशक्त रूप से अभिव्यक्त हुआ है। महाभारत में अर्जुन का युद्ध से विमुख होना इसी दुविधा का प्रतीक है। युद्ध में उतरना उन्हें गलत प्रतीत हो रहा था, किंतु

श्रीकृष्ण ने यह स्पष्ट किया कि धर्म की रक्षा के लिए कर्म आवश्यक है। युद्ध में संभावित त्रुटियाँ स्वीकार्य हैं, किंतु अन्याय के सामने निष्क्रिय रहना अधर्म है।

रामायण में भी यह संदेश अंतर्निहित है। श्रीराम अनेक बार कठिन निर्णय लेते हैं—जिन पर प्रश्न उठाए जा सकते हैं—परंतु वे कर्म से विमुख नहीं होते। उनका जीवन यह सिखाता है कि धर्म का मार्ग पूर्णतः त्रुटिरहित नहीं, परंतु अकर्म का विकल्प उससे कहीं अधिक विनाशकारी है।

यूनानी मिथकों में भी प्रोमेथियस का उदाहरण उल्लेखनीय है, जिसने मानवता के लिए अग्नि चुराने का जोखिम उठाया। उसका कर्म दंडनीय था, परंतु निष्क्रियता मानव विकास को अंधकार में ही रखती।

साहित्यिक और बौद्धिक उदाहरण: विश्व साहित्य में यह विचार बार-बार प्रतिध्वनित होता है। टॉल्स्टॉय ने अपने लेखन में यह दिखाया कि नैतिक साहस के बिना जीवन खोखला हो जाता है। बर्ट्रेंड रसेल ने कहा था कि "संसार की अधिकांश समस्याएँ इसलिए बढ़ती हैं क्योंकि बुद्धिमान लोग संदेह में रहते हैं और मूर्ख लोग आत्मविश्वास से भरे होते हैं—यह संदेह अक्सर निष्क्रियता को जन्म देता है।"

कबीर जैसे संत कवि भी परोक्ष रूप से यही संदेश देते हैं कि भय और लोभ से उत्पन्न अकर्म आत्मिक पतन का कारण बनता है। उनका आग्रह था कि सत्य का मार्ग कठिन हो सकता है, परंतु चुप्पी उससे अधिक घातक है।

आधुनिक सामाजिक और नैतिक संदर्भ: आज के युग में यह कथन अत्यंत प्रासंगिक हो गया है। जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, नैतिक पतन और लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षरण जैसे मुद्दों पर अक्सर समाज निष्क्रिय बना

रहता है। यहाँ गलत नीति या अपूर्ण प्रयास की कीमत भी स्वीकार्य हो सकती है, परंतु कुछ न करने की कीमत भविष्य की पीढ़ियाँ चुकाती हैं।

प्रशासनिक और नैतिक निर्णयों में भी यह सिद्धांत महत्वपूर्ण है। एक लोकसेवक के लिए निर्णय में त्रुटि संभव है, किंतु निर्णय न लेना शासन को पंगु बना देता है। यही कारण है कि नैतिक साहस को नेतृत्व का अनिवार्य गुण माना गया है।

निष्कर्ष: अंततः, "गलत होने की कीमत, कुछ न करने की कीमत से कम है"— यह कथन मनुष्य को सक्रिय, उत्तरदायी और साहसी जीवन जीने का आह्वान करता है। यह स्वीकार करता है कि त्रुटि मानव स्वभाव का हिस्सा है, परंतु निष्क्रियता आत्मा का क्षरण है। कर्म से ही अनुभव, सुधार और प्रगति संभव है। इतिहास, दर्शन और मिथक— यह सिखाते हैं कि जो समाज और व्यक्ति गलत होने का साहस रखते हैं, वही अंततः सही दिशा में आगे बढ़ते हैं।

इस प्रकार, जीवन में सबसे महँगी कीमत गलत होना नहीं, बल्कि वह मौन और जड़ता है, जो परिवर्तन की संभावना को ही समाप्त कर देती है।

गामालोएटी मंदिर, उदयपुर, त्रिपुरा

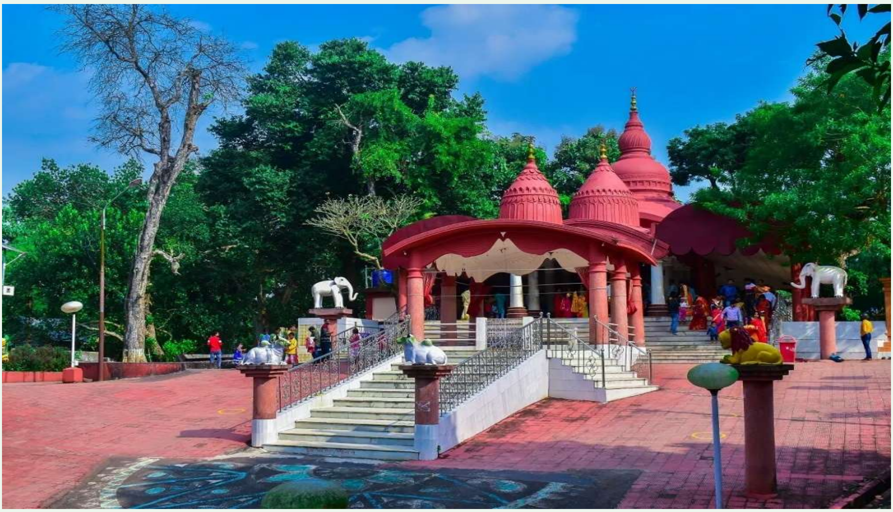

कसवा काली मंदिर, त्रिपुरा

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी,1950 से संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है-

राजभाषा अधिनियम धारा, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये जाने वाले कागजातः

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जायें- **संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र, संविदाओं और करारों का निष्पादन, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र और निविदा के लिए नोटिस और प्रारूप।स**

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987, 2007, 2011) के प्रमुख नियमः

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दी में दिया जानाः हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 6- हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोगः अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाए एवं ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि की भाषाः कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7 (3)– सेवा संबंधी आदेश या सूचनाः यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाई भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

नियम 8- नियम बनाने की शक्तिः

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी।
2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निष्प्रभावी हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभावी होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नियम 9- हिन्दी में प्रवीणताः यदि किसी कर्मचारी ने

1 मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

2 स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

3 यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10- हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञानः

यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

1. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार

के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

3. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)

केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत टिप्पण,प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 11- मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदिः

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12- अनुपालन का उत्तरदायित्वः

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-
    i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और
    ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

राजभाषा संबंधी भारतीय संविधान के अनुच्छेदों का संक्षिप्त परिचयः

अनुच्छेद 343- संघ की भाषा

अनुच्छेद 344- राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

अनुच्छेद 345- राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346- एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

अनुच्छेद 347- किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

अनुच्छेद 348- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियम, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 349- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।

अनुच्छेद 350- व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 351- हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

अनुच्छेद 120- संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 210- विधानमण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा

कुकी जनजाति

कूकी लोग, या कूकी-ज़ो लोग, पूर्वोत्तर भारत के राज्यों मणिपुर, नागालैंड, असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम, के साथ-साथ पड़ोसी देशों बांग्लादेश और म्यांमार में रहने वाला एक जातीय समूह है। कूकी लोग इस क्षेत्र के सबसे बड़े पहाड़ी आदिवासी समुदायों में से एक हैं। पूर्वोत्तर भारत में, वे अरुणाचल प्रदेश को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में मौजूद हैं। म्यांमार के चिन लोग और मिज़ोरम के मिज़ो लोग कूकी लोगों के ही संबंधी आदिवासी समूह हैं। सामूहिक रूप से, उन्हें 'ज़ो लोग' कहा जाता है।

भारत में कूकी लोगों के लगभग पचास आदिवासी समूहों को 'अनुसूचित जनजाति' के रूप में मान्यता प्राप्त है, यह मान्यता उस विशेष कूकी समुदाय द्वारा बोली जाने वाली बोली और उनके मूल क्षेत्र के आधार पर दी गई है। "कूकी" शब्द एक बाहरी नाम (exonym) है: इस शब्द का इस्तेमाल बंगाल के लोग उन आदिवासी समूहों को संबोधित करने के लिए करते थे, जो पटकाई-अराकान

योमास (Patkai–Arakan Yomas) क्षेत्र में रहते थे; यह क्षेत्र हिमालय पर्वतमाला का पूर्वी विस्तार है, जो भारत और म्यांमार के बीच उत्तर से दक्षिण दिशा में फैला हुआ है। इस शब्द का उल्लेख त्रिपुरा के ऐतिहासिक वृत्तांतों में, राजा धन्य माणिक्य (शासनकाल: 1490–1515) के समय से ही मिलता है, और उसके बाद भी इसका ज़िक्र नियमित रूप से होता रहा है। इससे भी पहले के समय का एक संस्कृत दोहा मिलता है, जिसमें 'कूकीस्थान' (कूकी-भूमि) में 12वीं शताब्दी में दी गई एक भूमि-अनुदान (land grant) का उल्लेख किया गया है। तिब्बती बौद्ध लेखक तारानाथ (1575–1634) ने कूकी (को-की) देश का विस्तृत वर्णन लिखा है, जिसमें उन्होंने लगभग पूरी पूर्वी पहाड़ी श्रृंखला और उससे भी आगे के क्षेत्रों को शामिल किया है। इस शब्द का उल्लेख पारंपरिक मैतेई भजनों में भी मिलता है, जिनमें कूकी राजा की स्तुति मैतेई राजा के साथ ही की गई है।